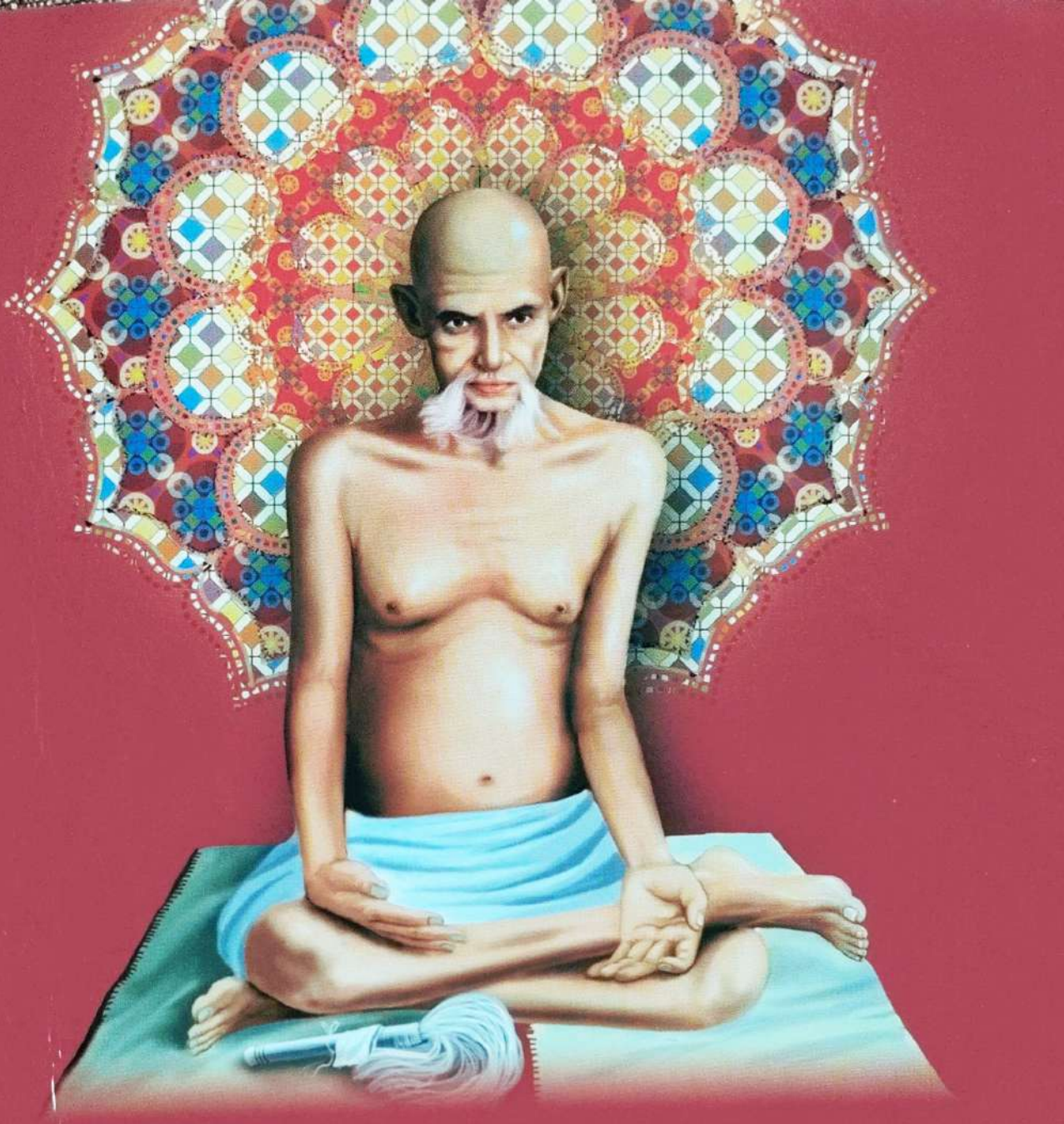
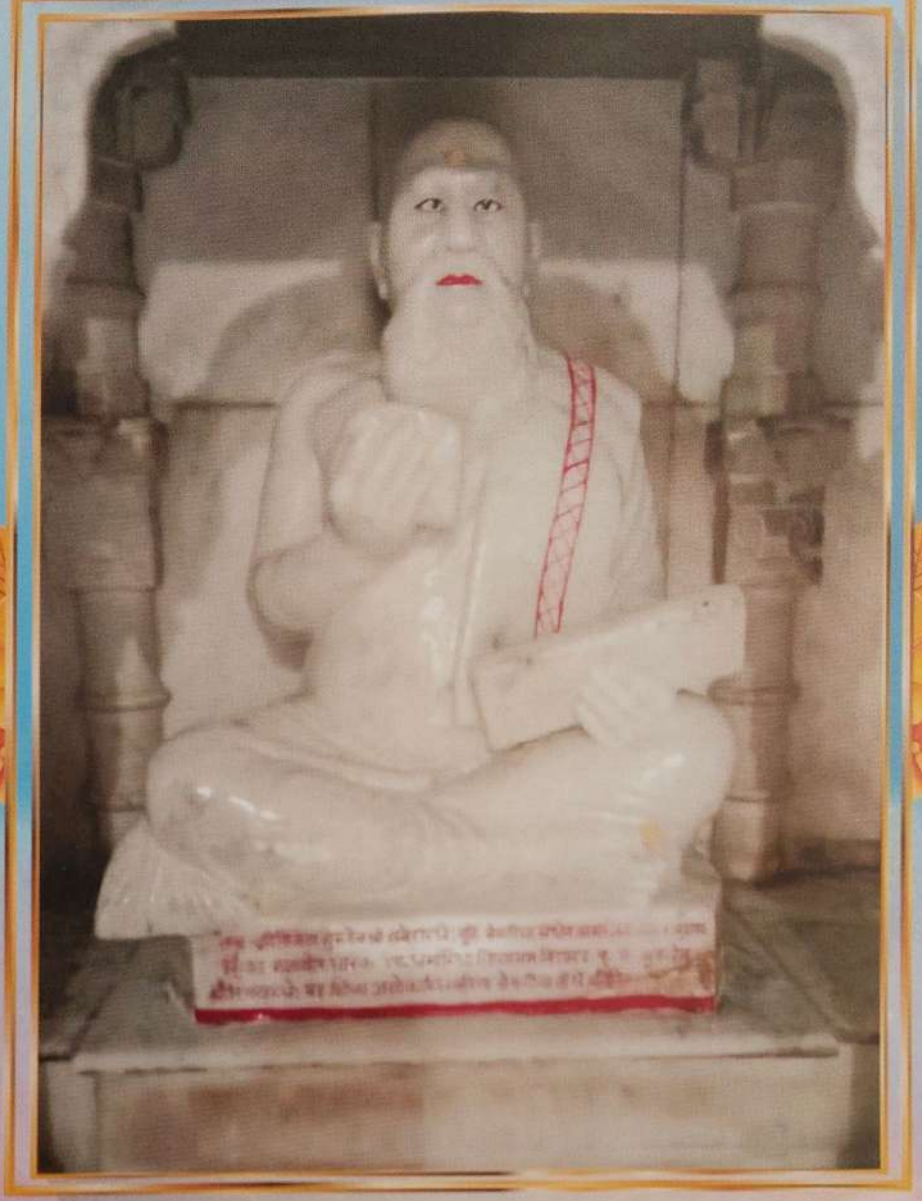


ज्ञानतीर्थ, आगमोद्धारक पूज्य गुरुदेवश्री

आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजा

पूज्यश्री के 150वें जन्म उत्सव (स्वर्ण शताब्दी वर्ष) के उपलक्ष में
150 वाक्यों में लिखा गया संक्षिप्त जीवन चरित्र



वादीविजेता... प्रभावक प्रतिभा संपन्न

दादा गुरुदेवश्री झवेरसागरजी महाराजा

आज से 150 वर्ष पूर्व... वि.सं. 1931 में रतलाम नगरी में ऐतिहासिक चातुर्मास, करके... भव्य छ:रिपालित संघ लेकर सेमलिया तीर्थ पधारे थे... वहां के गुरुमंदिर की एक झलक



ज्ञानतीर्थ, आगमोद्धारक पूज्य गुरुदेवश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजा

पूज्यश्री के 150वें जन्म उत्सव (स्वर्ण शताब्दी वर्ष) के उपलक्ष में
150 वाक्यों में लिखा गया संक्षिप्त जीवन चरित्र

: आलेखन :

तपस्वीरत्ना मातृहृदया श्रमणीवर्या श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
श्रमणीवर्याश्री अर्चितगुणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
साध्वीवर्याश्री योगनिधिश्रीजी

: प्रकाशन :

श्री आगमोद्धारक प्रतिष्ठान, अमदावाद

पुस्तक नाम

ज्ञानतीर्थ, आगमोद्धारक पूज्य गुरुदेवश्री

आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजा

दिव्याशीर्वाद

शासनज्योतिर्धर, मालवा-मेवाड़ उद्धारक

प.पू. महोपाध्यायश्री धर्मसागरजी म.सा.

आगमविशारद प.पू.श्री अभयसागरजी म.सा.

जिनागमसेवी प.पू. गच्छा.श्री दौलतसागरसूरिजी म.सा.

भक्ति प्रभावक प.पू.आ.श्री जिनचंद्रसागरसूरिजी म.सा.

शुभाशीर्वाद

वचनसिद्ध, गच्छाधिपति प.पू.आ.श्री नरदेवसागरसूरिजी म.सा.

शासन प्रभावक प.पू.आ.श्री अशोकसागरसूरिजी म.सा.

पावन प्रेरणा

बंधुबेलड़ी प.पू.आ.श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी म.सा.

: आधार ग्रंथ :

(1) अगामोद्धारकश्री

(2) आगमवेत्ता नाम तिहारा

(3) ऐसे हैं पू.सागरजी म.

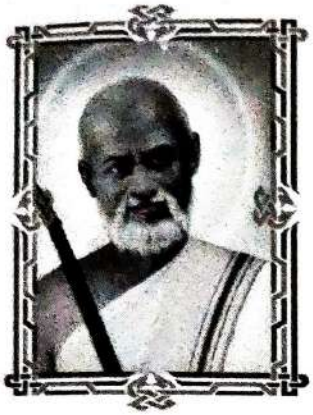
प्राप्ति स्थान

श्री जैनानंद पुस्तकालय
ओसवाल महोल्लो,
सुभाषचौक, गोपीपुरा,
सुरत-395001.

श्री नवकार परिवार सेवा संस्थान
बी-12, नाकोडा टावर,
भगवान महावीर मार्ग,पीपली बाजार, इन्दोर
मो. 7869917477, 8823875419

मूल्य : 50 रू

समर्पण
Samarpan



स्वर्ण-शताब्दी वर्ष, १५० वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में,
मालवा के सर्वोच्च उपकारी ज्ञानतीर्थ
आगमोद्धारक श्री
आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा
के पावन करकमलो में...

आगम विशारद, नवकार मंत्र के अष्टांग साधक,
नागेश्वर तीर्थोद्धारक,
शताब्दी वर्ष १०० वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में
प.पू. पंन्यासप्रवर गुरुदेव
श्री अभयसागरजी महाराजा
के पावन करकमलो में...





पिछली शताब्दि के मालवा के प्रथम दीक्षित
मालवदेश दीपिका
सा.श्री मनोहरश्रीजी म.सा.
के 50वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में...

आशीर्वचन

- पू.आ.भ. श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी म.सा.
अषाढ वदी-९ * वेसु-सुरत

पूज्य गुरुदेवश्री सागरजी महाराज !

सागरजी को समझाने के लिए...समाने के लिए सागर शब्द भी छोटा पड जाता है।... पीछे रह जाता है।

सागर के भी सागर है पूज्य सागरजी महाराज.... वे सात समन्दर है।

* जीवन है जिनका... साहस का सागर
* शासन के लिए जो... समर्पण का सागर
* तीर्थ-तत्व और आगम के संरक्षण का सागर
* शास्त्रों एवं आगम-मंदिर जैसे विरल... सर्जन का सागर
* समुदाय जिनका... संयम का सागर
* अंतिम समय... समाधि का सागर
* नेतृत्व और संघो के लिए... संगठन का सागर और...
* स्मरण जिनका... सद्बुद्धि का सागर

150 वें जन्म उत्सव पर स्वर्ण-शताब्दि-वर्ष में 150 अंजलि श्री संघ पूज्य श्री के चरण में समर्पित कर रहा है। जिन महापुरुष की प्रतीक्षा कर, काल प्रफुल्लित बन गया। जिन महापुरुष की उपस्थिति से काल प्रकाशित हो गया। जिन महापुरुष की स्मृति को पाकर काल प्रभावित होते रहेगा।

ये महापुरुष ज्ञानतीर्थ... आगमोद्धारक स्वरुप थे... है और रहेंगे...
वे कालातीत... कल्पनातीत... व्यक्तित्व और कृतित्व थे...।

150 वे जन्मोत्सव पर 150 वाक्यों में पूज्यश्री का जीवन परिचय देती एक पुस्तिका आलेखन हेतु छोटी-सी प्रेरणा... सा.श्री योगनिधिश्रीजी को की... और उन्होंने इसे स्वीकार कर सुन्दर पुरुषार्थ किया... जिसका परिणाम आपके कर कमल में दिखाई दे रहा है। उनकी बहुत अनुमोदना...

अन्त में पूज्यश्री के समंदर की कुछ लहरें... हम सभी भी उपलब्ध कर धन्य बनें वही कामना...

विश्वविभूति की विराट प्रतिभा का शब्दांकन

- पंन्यास आगमचन्द्रसागर
अषाढ वदी ७, सुरत-कैलासनगर

बीसवीं शताब्दी में एक ऐसी विभूति हो गई है, जिन्हें शब्द के माध्यम से हम जान-पहचान नहीं सकते।

शक्कर-गुड-गन्ने का रस-मिश्री-शहद जैसी अनेक चीज मीठी मधुर है। हर चीज का बयान दो शब्द में हो जाता है मीठा। मगर हर चीज की मधुरता में भिन्नता है। उसका वर्णन शब्दों में करना नामुमकीन है। फिर भी हम हमारे अनुभव को शब्द में प्रस्तुत करने हेतु प्रयास अचूक करते हैं।

बस, पूज्यपाद, आगमोद्धारक आचार्यदेवेश श्री आनंदसागरसूरिजी का व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा था। श्रुतोद्धार-तीर्थोद्धार-बाल दीक्षोद्धार-संघोद्धार जैसे अनेक कार्य उन्होंने किये है। हम उनकें कार्यकाल-प्रभावकता का जिक्र तीन शब्दो में करते है वे 'महान' थे। मगर उन्होने अपना खून-पसीना बहाया है, संघर्ष-संवाद समाधान के घाव सहे है। सिद्धांत-सामाचारी एवं संघ मर्यादा को टिकाने हेतु अनेक आपत्ति-विपत्तिओ का सामना किया है। प्रारंभ में अकेले होने पर भी कभी निराशा-हताशा के बादल की परछाई नहीं गिरने दी है। यह सब बातें शब्दस्थ करना नामुमकिन है।

फिर भी श्रमणीवर्या श्री योगनिधिश्रीजी...ने भक्ति से प्रेरित होकर, बहुमान के अपूर्वभाव से शब्दस्थ करने का विनम्र प्रयास किया है। भावों के उच्च शिखर को स्पर्श करना संभव न बना तब तलहटी से ही उनका वर्णन किया है। परिमिति शब्दों मे अपरिमित भावों का शब्दांकन किया है।

पूज्यश्री का परिचय करके उनके गुणवैभव की समृद्धि लेखक-वाचक सभी के जीवन में आए ऐसे मंगलभाव के साथ अस्तु...।

मन की बात

- अमितगुणाश्रीजी
श्रावण सुद-१, उज्जैन

'आगमोद्धारकश्री' ही जिनकी पहचान है...
बहुमुखी व्यक्तित्व के जो धनी है...
आगमों को ही जिन्होंने जीवन बना लिया था...
इतिहास के पन्नों पर जो अजर-अमर है....

ऐसे पूज्य सागरानंद सूरीश्वरजी म.सा. के 150 वें जन्म वर्ष निमित्ते उनके जीवन खजाने में से अनमोल 150 Point को संकलित करने का अनूठा कार्य आशु कवि सा. योगनिधिश्रीजी ने किया है... जो सराहनीय है...

हम अनुमोदना करते है, आगे भी ऐसे कार्य करते रहना, अनेक रचनायें आदि करते हुए जिनशासन का नाम रोशन करना।

प.पू. आगमोद्धारकश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म.सा. के इन विशिष्टताओं के अनोखे खजाने का आप सभी लाभ लेकर आत्मकल्याण करे यही शुभेच्छा...

वर्तमान में भरतक्षेत्र में
न तो तीर्थंकर विहरमान हैं... न गणधर विद्यमान हैं
न चौदह पूर्वधर मौजूद हैं... न श्रुतकेवली उपस्थित हैं
फिर भी... आशा की एक तेजस्वी किरण देदीप्यमान है...
वह है

सुविहित-परंपरा

उसी परंपरा के एक जगमगाते यशस्वी नक्षत्र और
समग्र सद्गुणों का एक विराट फलक
अर्थात्
पूज्य आगमोद्धारकश्री...
हम चाहते हैं कि आपकी जीवन-गाथा
गुण-गौरव की अस्मिता का सफल-आलंबन बने...



गुरुस्तुतिं

चरणाम्बुजे भक्तो वसे, हृदयाम्बुजे परमातमा
करकमलमां शास्त्रो वसे, मुखकमलमां माँ शारदा
नेत्राम्बुजे अविकारिता, नवकार नाभिकमलमां
आनन्दसागरसूरिजी चरणे भावे करुं हुं वंदना...

ज्ञानतीर्थ...
आगमोद्धारक पूज्य गुरुदेव
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा

1

जिनका जन्म रामायण-महाभारत से भी पूर्व कालीन नगरी कपडवंज (गुजरात) की धन्यधरा पर विक्रम संवत 1931 में अषाढ कृष्ण (राजस्थानी श्रावण वदी) अमावस्या की रात्रि में 3.37 पर तेजस्वी- ओजस्वी-यशस्वी बालक के रुप में हुआ। जिसका नाम रखा गया हेमचंद्र।

2

जिनके गर्भ में आने से पूर्व... माता यमुना बहन ने स्वप्न में आकाश में से उतरते मदमस्त-मनोहर-आकृतियुक्त हृष्ट-पुष्ट सुन्दर 'वृषभ' को देखा,... जो एक शासन प्रभावक महापुरुष के आगमन का संकेत दे रहा था...

3

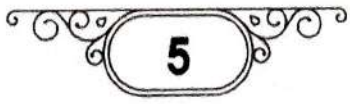
जिनके जन्म के एक दिन पूर्व माता को सामूहिक स्नात्रपूजा पढाने का भाव हुआ और जब स्नात्रपूजा पढाई गई तब जिनमंदिर मे कुल मिलाकर 45 पुण्यात्माओं की उपस्थिति रही। जिसमें 11 श्रावक, 12

श्राविका, 10 बालक, 6 बालिका, 4 साध्वीजी एवं 2 साधु भगवंत मौजूद थे जो क्रमश: 11 अंग, 12 उपांग, 10 पयन्ना, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र एवं नन्दीसूत्र-अनुयोगद्वार सूत्रस्वरुप 45 आगम के प्रतिक हों ऐसे प्रतीत हो रहे थे।



काशी के विद्वान पंडित ने इस बालक की कुंडली देखकर कहा था कि मैंने अपने जीवनकाल के 70 वर्ष में पहलीबार ऐसी कुंडली देखी है...

भगवद्गीता... की पंक्ति... 'यदा यदा ही धर्मस्य' जब-जब धर्म की हानि होगी तो प्रभु का अवतरण होगा... इस बालक के जीवन में भी ये पंक्तियां सही साबित हो रही है।



जिनके गर्भ में आते ही माता को उत्तम दोहद उत्पन्न हुए जैसे कि,

* मैं देवर्धिगणि क्षमाश्रमण का चरित्र पढूं...
* मैं आगम-ग्रंथो का प्रतिलेखन, संमार्जन तथा वासक्षेप पूजन करुं...
* पौषध सहित ज्ञानपंचमी, मेरुतेरस, वीर निर्वाण कल्याणक, शाश्वती ओली, चौमासी छट्ठ की पौषधपूर्वक आराधना करुं...
* प्रभु-प्रतिष्ठा कराऊं... नंदीसूत्र का श्रवण करुं...

माता के उपरोक्त सभी दोहद परिपूर्ण हुए... अषाढ वदी अमावस्या को भी प्रात: बारह व्रत की पूजा एवं पुण्यप्रकाश का स्तवन श्रवण किया। माता के जीवन में आराधनाओं की मंगल-हारमालाओं का सृजन हुआ।



जिनको बचपन से ही जीवन की सफलता के लिए पिता... ने पांच मंत्र प्रदान किए थे...

1. हमेशा, हित-मीत-प्रीतकारी वचन बोलना।
2. अभिमानरुपी हाथी से सावधान रहना।
3. ईर्ष्या-निंदा का त्याग करना।
4. नवकार मंत्र का जाप करना।
5. साधु-संत की वैयावच्च करना।



बाल्यावस्था में गले पर हुआ फोडा फूटने पर भी... जिसने अपूर्व सहनशीलता, धीरतां एवं बुजुर्गों के प्रति सद्भावनां का परिचय दिया एवं खेल में बच्चों के द्वारा स्ट्रीट लाईट टूटने पर स्वयं नहीं भागकर साहसिकता की झलक भी दिखलाई।



व्यवहारिक एवं धार्मिक शिक्षण-प्राप्त करते हुए जिन्हें वादी विजेता पूज्य गुरुदेवश्री झवेरसागरजी म.सा. का परिचय केवल उनकी प्रतिकृति (photo) द्वारा हुआ और पूर्वभव का कोई गहरा ऋणानुबंध हो... इस तरह स्नेहभीने बनकर मन ही मन उन्हें शिर-छत्र के रुप में स्वीकार भी कर लिया। किसी भी समस्या का समाधान वे उस प्रतिकृति के समक्ष प्राप्त कर लेते।



जिन्होंने अपने बडे भाई की दीक्षा के शुभावसर पर ब्रह्मचर्य व्रत के पच्चक्खाण किए एवं दीक्षा हेतु 3 विगई का त्याग किया।



नाबालिग उम्र में संयम की अनुमति मांगने पर भी जिन्हें माता के अथाह मोह के कारण विवाह करना पडा। पर उस बंधन को भी अपने पिता की मदद से तोड़कर विरति की वरमाला पहनने में जो कामयाब रहे...।



वादी विजेता श्री झवेरसागरजी म.सा. द्वारा माणिभद्रजी का स्मरण करने पर... जिनका दीक्षा-मुहूर्त भी तपागच्छाधिष्ठायक... निर्मलसम्यकत्वी एकावतारी श्री माणिभद्र यक्षराज द्वारा लिखित में प्रदत्त था। विक्रम संवत 1947 महा सुदी पंचमी (वसंतपंचमी) के दिन जिनके जीवन में... संयम का स्वर्णिम सूर्योदय हुआ...।



जिन्हे अपने गुरुदेवश्री ने मृत्यु के अंतिम समय में यह आशीर्वाद दिए कि शासन प्रभावक नहीं... श्रुतोपासक... श्रुतसेवक... बनना एवं आगमों का ध्यान रखना यह आशीर्वाद ही उनके जीवन का प्रेरक-बल बन गया।

13

दीक्षा के मात्र नौ महिने में ही जिन्हें अपने तारणहार वात्सल्य... भंडार पूज्य गुरुदेवश्री झवेरसागरजी म.सा. का वियोग सहना पडा। प्रारंभ में तो बेहद निराश हो गए... परंतु एक रात्रि में गुरुदेव स्वयं पधारे और कहने लगे आप तो पूर्वभव के श्रुतधर हो... स्वयं ही पढ सकते हो... जो आगम पढना हो उसे ऊंचे स्थान पर रखकर वंदन कर के... वायणा संदिसाहुं आदि आदेश लेकर पढाई शुरु करना परंतु आगम, जोग किए बिना मत पढना।

14

जिन्होंने अपने गुरु-विरह में प्रथम-दिन से ही निर्दोष संयम-जीवन के दृढ़ संकल्प किए उसी अनुसार गौचरी-चर्या करते हुए आगम ज्ञानाभ्यास बढाते रहे... एक हाथ में घडा एवं एक हाथ में तर्पणी डंडा लेकर गौचरी-पानी व्होरने जाते पानी कभी ठारते नहीं (ठंडा नहीं करते), पुरिमुड्ढ पच्चकखाण पारते एवं प्रासुक आहार-पानी वापरकर पुनः अभ्यास में लीन हो जाते।

15

व्याकरण की पुस्तक तलाश करने में जिनको 180 दिन लगे... मगर मात्र 90 दिन में ही उसे कंठस्थ कर लिया।

16

ज्ञान के विनय एवं गुरुबहुमान से जिनके ज्ञानावरणीय कर्म का

क्षयोपशम इतना विकसित हुआ कि यदि... शास्त्र प्रत में लहीए (ग्रन्थ की copy करने वाले) के द्वारा लिखने में कोई भूल होती या दीमक (उधेई) आदि के उपद्रव से जो अक्षर/शब्द/पंक्ति खंडित हो जाती... तो वे स्वयं अंतः स्फुरणा से उसे पूर्ण करने का कार्य करते और वापिस कहीं उस ग्रंथ की दूसरी प्रत मिल जाती तो Tele करने पर उसमें जोड़ा हुआ शब्द शत-प्रतिशत सही निकलता।



पूर्वाचार्यों के विनय एवं बहुमान से मानो उनकी दिव्यशक्ति को अपने भीतर अवतरित ना की हो... इस तरह से एक-एक ग्रंथ का जिन्होंने योगोद्वहनपूर्वक शानदार श्रुताभ्यास किया...।



पूर्वभव की साधना से जिनके जीवन में प्रबल मेधा, तीक्ष्ण तार्किकता एवं तलस्पर्शी चिंतन आदि गुण जबर्दस्त रुप उद्घाटित हुए...।



''कद वामन पर मेधा महान'' यह उक्ति जिन के जीवन में अक्षरशः चरितार्थ हुई। वि.सं. 1950 में जब उनका चातुर्मास राजस्थान के पाली में था। चातुर्मास प्रवेश के दिन ही श्री दशवैकालिकसूत्र के प्रथम श्लोक के प्रथम चरण पर डेढ घण्टे तक प्रवचन चला जिसे सुनकर मूर्ति पूजा-विरोधीओं ने भी प्रवचन सुनकर चुप्पी साध ली।



जैसे वीर प्रभु ने कर्म क्षय के लिये अनार्यभूमि में विहार किया वैसे - जिन्होंने प्रभु पूजा विरोधी क्षेत्र राजस्थान के थलीगांव आदि प्रदेशों की और विहार किया और वहां जाकर बेनमून शासन प्रभावना की।



जिन्होने मात्र चार साल के लघु दीक्षा पर्याय में गुजरात के पेटलाद नगर में तिथि संबंधी चर्चा-परामर्श, एवं परापूर्व के संबंध द्वारा पर्वतिथि की अमूल्य आराधना का मर्म बताकर अनेक पूज्यों तथा राजनगर (अहमदाबाद) के धर्मनिष्ठ-श्रावकों के साथ संवत्सरी की आराधना की एवं समग्र भारतवर्ष में पर्वतिथि की अखंडितता को ''मान्य'' करवाया।



जिनकी पावनकारी निश्रा में पेटलाद नगर में संवत्सरी-महापर्व की शास्त्रोक्त आराधना हुई तब... वहां के सुश्रावक श्री मनसुखभाई भगुभाई ने प्रतिक्रमण पश्चात् सकल श्री संघ के आराधकों को सोने की वेढ (अंगूठी) की प्रभावना की।



जिनके द्वारा बताए गए/समझाए गए सिद्धांत, साहित्य एवं सामाचारी जैन जगत में शिलालेख के समान माने जाते हैं, ये उद्‌गार पंडित नगराजजी के मुख से नीकले थे।



जिनकी नम्रता एवं निःस्पृहता आदर्शपूर्ण थी। अनेकानेक ग्रंथो के संपादन के बावजूद और आचार्यपद आरुढ होने के बाद भी वे ग्रंथो की प्रस्तावना में अपने-आपका परिचय केवल 'श्रमण संघ-सेवक' के रुप में देना ही पसंद करते थे... उपाधि, विशेषणों, पदविओं के अतिरिक्त लिबास से वे स्वयं को वंचित ही रखते थे।



जिनके हृदय में प्रतिपल किसी भी समुदाय के कोई भी श्रमण भगवंत की वैयावच्च का लाभ लेने की भावना बनी रहती... यही कारण था कि तीन श्रमण भगवंतो की आजीवन-सेवा का लाभ पाने में वे सफल रहे।



एक ओर... जिनका शास्त्र संशोधन तो बेजोड-बेमिसाल था ही... प्रभु मिलन भी अद्भूत था किसी भी तीर्थ स्थान पर जाते तो प्रभु की ध्यानस्थ मुद्रा का ध्यान कर अंतर में प्रगट हुए भावों को लयबद्ध कर पद्यकृति के रूप गूंथ लेते... जो संस्कृत-प्राकृत, गुजराती चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति के रुप में आज भी उपलब्ध हैं।



भयंकर अकाल के समय में अहमदाबाद चातुर्मास दौरान जिन्होंने लगातार 15 दिन तक जिनवाणी की मूसलाधार बारिश कर... जन

समुदाय में ऐसा माहौल बनाया कि थोडे ही समय में ही व्यवस्थापक महाजनों की झोली विपुल धन राशि से छलक उठी। कई विधवा बहनें... अन्य बहनों के सौभाग्य को उजडने से बचाने के लिए... दान के लिए तैयार हुई। इस तरह पूरे वर्ष तक साधर्मिकभक्ति, अनुकंपा और जीवदया में एकत्रित किए दान से जिन शासन की जयपताका दसों दिशाओं में लहराती रही ।



जिन्होंने शासन-सेवा के साथ षट्दर्शन के अभ्यास में भी कोई कमी नहीं रखी। "जिन दर्शन" का ज्ञान तो वे ले ही रहे थे... काशी के विद्वान पंडितो के पास... षट्दर्शन का अभ्यास भी बडी गइराई से कर रहे थे।



गुजरात के पेथापुर की प्रांतीय परिषद् में जिन्होंने आर्यदेश की जाहोजलाली और संस्कृति की पुनः प्राप्ति के लिए -

'जागो... काम पर लगो... और भौतिकवाद से भागो...

यह त्रिपदी देकर वहां के कलह-क्लेश-विवाद को शांत किया।



जिनकी प्रतिभा, प्रभावकता एवं पवित्रता से प्रभावित होकर अनेक मुमुक्षु दीक्षा लेने के लिए लालायित हो जाते परंतु जो उग्र-परीक्षा द्वारा

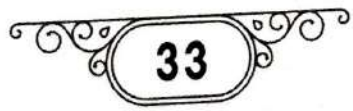
यह जानते कि, व्यक्ति-राग से तो यह मेरे पास नहीं आया है ना ? जो मोह-गर्भित सियार होते वे... उनकी सिंह-गर्जना सुनकर भाग जाते और ज्ञानगर्भित संयम-रागी जीव ही साधु-धर्म में प्रवेश पा सकते।



सच्चा धन और सच्ची संपत्ति जैन साहित्य के संस्कृत, गुजराती, प्राकृत एवं अन्य भाषा के ग्रंथ ही हैं ऐसा समझाकर जिन्होंने सबसे प्रथम, ग्रंथ मुद्रित करवाने हेतु 'श्रुत-प्रकाशन-संस्था' की स्थापना का क्रांतिकारी उपदेश भी दिया।



श्रुतसाहित्य को नष्ट होता देखकर... जिन के सदुपदेश से सूरत निवासी श्रेष्ठीवर्य गुलाबचंदजी देवचंदजी के द्वारा सेठ देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड की स्थापना हुई। इससे अतिरिक्त 'पच्चीस' और संस्थाएँ स्थापित हुई। जिसके कारण... आज तक स्थानकवासी-तेरापंथी-खरतरगच्छ-अचलगच्छ-पायचलगच्छ-तपागच्छ आदि अनेक संप्रदायो के हजारों श्रमण-श्रमणी भगवंत श्रुतग्रंथो को सरलता से प्राप्त कर अध्ययन कर रहे हैं।



वीर निर्वाण की 25 वीं शताब्दी के मध्याह्न काल में जिन्होंने सर्व प्रथम आगम लिप्यंतर संशोधन एवं मुद्रण करवाने का ऐतिहासिक कार्य किया।



जब अंग्रेज-अधिकारिओं ने अपने तामसिक शौक एवं शिकार की सुविधा खातिर समेतशिखरजी तीर्थ में आवास बनाने की योजना बनाई तब मुंबई लालबाग में रहकर जिन्होंने अपनी विद्युत समान तेज वाणी से मुंबई के महाजनों के दिल में तीर्थ रक्षा की जिहाद जगाकर... अंग्रेज वाईसरॉय को भी झुका दिया... एवं उन्हें वह निर्णय वापिस लेने पर मजबूर होना पडा।



शिखरजी तीर्थ के सुरक्षित भविष्य को ध्यान रखते हुए अनेक संघ-आगेवानों को प्रेरित करते हुए सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के हस्तक पूरा पहाड खरीदवाया... इस हेतु हुए फंड में भी अपने सदुपदेश से जबर्दस्त सहयोग करवाया।

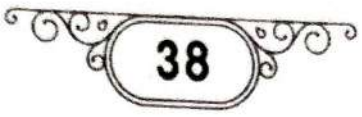


शासन, सिद्धांत और संघ की सुरक्षा संवर्धन के लिए... जिनके द्वारा सूरत में अमरीबाई उपाश्रय के समीप जैन तत्वबोध पाठशाला नामक संस्था की स्थापना हुई ज्ञान की इस गंगा में छोटे-बडे, आबाल गोपाल सभी सुबह-शाम पधारकर स्नानकर पावन होने लगे।



शासन विरोधी षड्यंत्र को निष्फल बनाने के लिऐ जिन्होंने अकेले ही सूरत की ओर विहार किया, परन्तु तब भी शासन की शान एवं

अनुशासन... बरकरार रखने के लिए सूरत में अपना सामैया नहीं करवाया। एकल विहारी साधु का सम्मान इस तरह नही होता... यह राजमार्ग... ऐसा करके समझाया। फिर भी विनय हेतु पधारे हुए श्रावक-श्राविका का समूह साथ में आया। जब वे नेमूभाई की वाडी में पहुंचे तब संघपूजन हुआ उसमें 2700 श्रीफल की प्रभावना हुई।



पाटण में जब अकाल राहत फंड की आवश्यकता महसूस हुई तब जिन्होंने अपना चातुर्मास प्रवेश सामैया बिना वाद्य-यंत्र के करवाकर... अपने सादगी-वैभव का आदर्श जगत् को दिया एवं श्रीसंघ की आंखे खोल उन्हें कर्तव्यों के प्रति जाग्रत किया।



जिनकी पावन प्रेरणा से उत्तर गुजरात के श्रावकों ने आगमोदय समिति की स्थापना की, तो भोंयणी में आगम-सेवा-संस्था भी स्थापित हुई।



मुखपाठ... आगमज्ञान की परंपरा विच्छिन्न होने पर 1500 साल बाद उसी इतिहास को ताजा करने के लिए पाटण श्री संघ की विनंति से जिन्होंने सर्वप्रथम जो छ महिने तक चली। आगम वाचना सटीक दशवैकालिक सूत्र एवं षट्त्रिंशिका ग्रंथ पर दी।

मुंबइ के परम सुश्रावक श्री चिमनभाई पटवा आराधक वर्ग में अग्रसर थे... वे कुंभार टुकडा आयंबिल खाता के प्रेरक थे... तथा गोडीजी पौषध मंडल के स्थापक भी थे । संयम की तीव्र अभिलाषा होने पर भी कर्मवशात् धर्मपत्नी अति कर्कशा मिली थी । इसी कारण कोई भी पूज्यश्री, चिमनभाई को दीक्षा देने के लिए तैयार नहीं थे । उनके गोडीजी पौषध मंडल के सारे पौषार्थी आराधक, सर्व विरति धर्म के अनुरागी थे । उन सभी ने गोडीजी पार्श्व प्रभु के समक्ष नियम अंगीकार किया कि - यदि चिमनभाई दीक्षा ले तो हम सभी को भी दीक्षा लेना । उनके दीक्षा दिन से जब तक हम सभी दीक्षा अंगीकार ना करें तब तक 6 विगई का त्याग ।

इस बीच, चिमनभाई के एक मित्र हीराचंदभाई की दीक्षा... चरित्र नायक के पास हुई । उन्होंने अपनी अटल हिम्मत से चिमनभाई को भी संयम की भेंट दी और मुनिश्री चंद्रसागरजी नामकरण किया । उसी दिन से, उनके नियमबद्ध 35 मित्रों ने 6 विगई का त्याग किया। वे सभी चन्द्रसागरजी के पास दीक्षा लेने को तैयार थे मगर जिन्होंने अपनी दीर्घदृष्टि से सोचकर यह कहा कि भविष्य में शासन का कोइ भी कार्य हो तो सभी समुदाय एक साथ साथ में बैठ सके, इस लिए अलग-अलग समुदाय में दीक्षा लेंगें तो शासन को लाभदायी रहेगा । फिर, एक के बाद एक 35 मुमुक्षुओं ने दीक्षा स्वीकार की । जिससे, पू.आ. हर्षसूरिजी म.सा.(पू.नीतिसूरिजी समुदाय), पू. महोपाध्याय श्री धर्मसागरजी म.सा., पू.पं. भद्रंकर विजयजी म.सा. (पू.रामचंद्रसूरि समुदाय), पू.आ.श्री देवेन्द्रसागरसूरिजी म.सा., पू.आ.श्री शांतिसूरिजी म.सा.

(भाभरवाले) आदि अनेक धुरंधर पूज्यश्रीओं की भेंट जिनशासन को मिली अर्थात् एक चिराग ने जिन शासन के अनेक समुदाय को रोशनी दी। एक साहस ने अनेक समुदाय को सिद्धि हासिल करवाई।



पहले के समय में जब सागर-समुदाय को छोडकर अन्य सभी समुदाय में श्रमणी-संपदा थी तब कपडवंज में जो दूसरी आगम-वाचना हुई जिसे सुनकर... कई सारे साध्वीजी भगवंत स्वगुरु की आज्ञा से जिनके आज्ञानुवर्ती बने... इस तरह जिनकी वाचनादि श्रवण से तपागच्छीय सागर शाखा में श्रमणीगण का आरंभ हुआ। आज वह संख्या 700 को पार कर गई है, और सभी एक ही आज्ञा छत्र में है।



कपडवंज में जिनकी द्वितीय आगम-वाचना

* ललित-विस्तरा ग्रंथ
* योग दृष्टि समुच्चय
* अनुयोग द्वार-सटीक
* आवश्यक सूत्र - सटीक एवं
* उत्तराध्ययन सूत्र - सटीक

आदि ग्रंथो पर हुई।



अहमदाबाद में जिनकी तृतीय आगम-वाचना विशेषावश्यक भाष्य एवं ठाणांगसूत्र के 1, 2 भाग के पठन-पाठन पूर्वक हुई।



सूरत में जिनकी चतुर्थ आगम-वाचना

* विशेषावश्यक भाष्य 1, 2
* स्थानांग सूत्र 1, 2
* औपपातिक सूत्र पर हुई।

इस वाचना के द्वारा ग्रंथ का अभ्यास बोध, ग्रंथ का संपूर्ण पठन-पाठन

आगमिक ग्रंथो की वांचन कला तथा अन्य कोई भी ग्रंथ का पठन-पाठन श्रमण-श्रमणी भगवंत स्वयं कर सके, ऐसा सामर्थ्य पूज्यो में प्रगट हुआ।



सूरत में जिनकी पांचवी आगम वांचना मे

* आवश्यक सूत्र 1 से 4
* अनुयोग द्वार सूत्र 1, 2

तथा नंदीसूत्र का साद्यन्त पठन-पाठन हुआ।



जब तक पूरे सूरत श्री संघ का विवाद दूर नहीं होगा तब तक आचार्यपद ग्रहण नहीं करुंगा तथा समग्र सूरत के श्रीसंघ, एक जाजम पर एकत्रित होकर सूरिपद का उत्सव बनाएगें तो ही सहमति प्रदान करुंगा।

ऐसी दो शर्त श्रीसंघ एकता के लिए जिन्होंने सूरत संघ के समक्ष रखी और तब सभी आगेवानों की सभा का एक स्वर-उदित हुआ कि इस बारे में श्री संघ हमें जो फरमाएगा वह हम करने के लिए तैयार है किन्तु किसी भी हालत में सूरिपदवी का लाभ तो सूरतवासी को ही मिलना चाहिए और आखिरकार, सूरत में ही जिनकी आचार्य पदवी होगी ऐसी घोषणा हुई।



तपागच्छीय सागर शाखा के 400 वर्ष के इतिहास में जिन्हें सब से प्रथम सूरिपद अर्पण हुआ।



सूरत में संघ-संगठन के लिए जिन्होंने ऐसी भी प्रेरणा दी कि नवकार-मंत्र गिनने वाली सभी आत्मा समान है तो ऐसे सभी पुण्यवान एक साथ बैठकर भोजन करे तो ही वह साधर्मिक-वात्सल्य कहलाता है और तब समस्त सूरत में जो अलग-अलग जिमनवार/सहभोज की प्रथा

थी उसे बंद करवाकर आचार्य पद के प्रसंग पर सभी साधर्मिक के सह भोजन की पवित्र आचरणा का निर्णय सूरत के नगर सेठ के द्वारा, जिन्होंने श्रीसंघ में जाहिर करवाया । और वही साधर्मिक-संघ-स्वामीवात्सल्य प्रथा अन्यत्र भी प्रारंभ करवाई जो आज भी जीवित है।



योगोद्वहन करने की उज्जवल परंपरा को अनुसरण करते हुए लम्बे अंतराल के बाद तपागच्छ में सर्व प्रथम आचार्य पदवी पूज्यपाद शासनसम्राट नेमिसूरीश्वरजी म.सा. की हुई उसके पश्चात् जिनकी दूसरी आचार्य पदवी हुई... वे थे गुरुराज... पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी म.सा. का।



संवत् 1974 में जब भारत के कई प्रदेशों मे भयानक अकाल पडा तब मुंबई के लालबाग के चातुर्मास में जिन्होंने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी के द्वारा अनुकंपा-जीवदया का शंखनाद किया । जीवदया, जैनों की कुलदेवी हैं... इस तरह मार्मिक बातें समझाकर मुंबईवासिओं के दिल को जीत लिया। जब अकाल फंड का प्रस्ताव रखा गया तब पलक-झपकते ही... उस जमाने में लाखों रुपए का फंड एकत्रित हो गया । जिससे हजारों निराश्रितों की जिंदगी सँवर उठी । बेजूबां पशुओ को भी राहत और सुकून मिला । इसके बाद तो मुंबईवासी जिन्हे करुणा के फरिश्ते और दुष्काल के देवता कहकर पुकारने लगे। इससे, जैन धर्म की प्रभावकता में खूब वृद्धि हुई और महाजन का जय-जयकार हुआ।



जिनके चातुर्मास परिवर्तन का लाभ सर कीकाभाई प्रेमचंद ने अपनी मातुश्री की भावना पूरी करने हेतु लिया, यह अवसर उनके लिये परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ क्योंकि उन्होंने पहले तो अपने यहां बुलाकर भी, पूज्यश्री का अनादर किया। लेकिन इसके बावजूद जब पूज्यश्री कुछ न बोले तो वे कुछ soft हुए... उसके बाद कीकाभाई ने गुरुवाणी श्रवण किया तो वे भावविभोर हो उठे। पश्चाताप करते हुए उन्होंने दो नियम लिए।

* अपने बंगले में घर देरासर करवाऊंगा ।

* संयम प्राप्ति के उद्देश्य से रोज 2 सामायिक करुंगा।

घर देरासर बनने के कुछ समय बाद अंग्रेज ऑफीसर, जो अपने-रहने खाने पीने के लिए हर किसी के घर का आश्रय ले रहे थे पर कानून होने की वजह से उनके बंगले में नहीं रह पाए और इस तरह उनका घर मांसाहार आदि पापों से बच गया एवं उनकी श्रद्धा गुरुदेव के प्रति और गहरी हो गई।



मुंबई लालबाग में चातुर्मास पश्चात् वहां से जिनकी पावन-निश्रा में अंतरिक्षजी का छ:रि पालित संघ निकाला गया।

इस संघ में प्रतिष्ठित श्रीमंत, विद्वान सद्गृहस्थ एवं उनके छोटे-छोटे बच्चे, श्राविकाएं आदि... सभी प्रेम और भक्तिपूर्ण हृदय से चलते हुए...

एकासना/उपवास आदि तप करते हुए... अन्तरिक्षजी पहुंचे । जब उनके साथ लाई गई जिनप्रतिमाजी तीर्थ में बिराजमान करने लगे, तब दिगंबरो ने उनका विरोध किया इतना ही नहीं गुरुवर पर हमला भी किया... फिर भी जिन्होंने अपने सत्य वचन पर दृढ रहते हुए... न्यायाधीश के समक्ष यह कहा कि - ''मुझ पर हमला जरुर हुआ है... परन्तु पीठ के भाग पर होने से वह किसने किया ये मैं नहीं कह सकता और हम तो ठहरे साधु... विपत्ति को सहन करना एवं किसी की शिकायत नहीं करना यह तो हमारा धर्म है ।''

इन बातों को सुनकर युरोपियन न्यायाधीश भी प्रभावित हुए और उनके भक्त बन गए।

54

जब ज्ञानभंडार के संचालन की लापरवाही तथा यति परंपरा के वंशज के अभाव में उनके संग्रह में से अमूल्य और अलभ्य ग्रंथ का विक्रय हो रहा था । तब एक व्यक्ति जिनके पास आया और आगम-ग्रंथ बेचने की बात करने लगा... उसके लिए राशि का इंतजाम करने में थोडा विलंब हुआ तब तक में तो वह ग्रंथ किसी ब्रिटिश ऑफिसर ने और अधिक मूल्य देखकर खरीद लिया । इस घटना ने जिनको हिला दिया... हृदय द्रवित हो गया... आंखे भीग उठी उसी समय... श्रुतज्ञान की रक्षा हेतु जिन्होंने योग्य निर्णय कर सुयोग्य ग्रंथो को खरीदा जा सके... इस हेतु फंड करवाया और ग्रंथो को खरीदवा कर निर्ममत्वरुप से अपनी देखरेख मे रखने लगें ।



श्रुतरक्षा में जिन्होंने एक निर्णय यह भी लिया कि जो ग्रन्थ जर्जरीत अवस्था में होते उन्हें कश्मीरी पेपर पर लिखवा लेते... ताकि वे दीर्घजीवी रहे। साथ ही ग्रंथो की सार्वजनिक व्यवस्था के विचार को मूर्त रुप देते हुए सूरत श्रीसंघ के वरिष्ठ सभ्यो द्वारा 'जैनानन्द पुस्तकालय' की स्थापना भी करवाई।



शास्त्रसंग्रह पर ममत्व ना हो जाए इस उद्देश्य से जिन्होंने क्रमांक 1 से 500 तक की प्रत/पुस्तक पर श्री जैन-आनंद कोष नाम लिखाया।

501 से 1000 तक की प्रत/पुस्तक पर श्री जैन-विजय कोष नाम लिखाया।

1001 से 1500 तक की प्रत/पुस्तक पर श्री जैन-माणिक्य कोष नाम लिखाया।

1501 से 2000 तक की प्रत/पुस्तक पर श्री जैन-अमृत कोष नाम लिखाया।

उसके बाद की 500-500 पुस्तक एवं प्रत पर उपरोक्त नाम बारी-बारी से लिखवाए। जब पुस्तक-संग्रह सागर की तरह विशाल हो गया तो जैनानंद-पुस्तकालय नाम दिया।



आज भी भारत के सर्वश्रेष्ठ 10 (Top Ten) ज्ञानभंडारों में 'श्री जैनानंद पुस्तकालय' अग्रणी है... जिसमें जैन ग्रंथो के अतिरिक्त बाईबल, कुरान, वेदग्रंथ गीता आदि सर्वधर्म के हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रंथ है तथा संस्कृत-प्राकृत-गुजराती हिंदी-अंग्रेजी आदि अनेक भाषा के अनेक धर्मो के प्राचीन एवं अद्वितीय ग्रंथ उपलब्ध है।



हस्तलिखित प्रतों की वृद्धि के लिए जिन्होंने और अधिक फंड एकत्रित किया। उस फंड का नाम कृतज्ञता स्वरुप, अपने आचार्यपद प्रदाता पू. कमलसूरीश्वरजी म.सा. के नाम से रखा... जो इस प्रकार था।

"पू.आ.श्री विजय कमलसूरीश्वरजी प्राचीन हस्तलिखित जैन साहित्य फंड"।



युरोप आदि देशों में भौतिक सुख प्राप्त करने हेतु अनेक संस्थाएं हैं, उसी की तर्ज पर एक संस्था हिन्द के जैनों में भी बने इस उद्देश्य से कुछ भोगोपासक सुधारकवादी एकत्रित हुए... संस्था के लिए जब पैसों की जरुरत पडी तो उनकी नजर जैन संघो के देवद्रव्य पर पडी... उनके 2 लक्ष्य थे।

1. लाखों रुपए का देवद्रव्य अपने हस्तगत करना।

2. देवद्रव्य से सामाजिक कार्य करना।

उस समय जिन्होंने देवद्रव्य की सुरक्षा के लिए सकल संघों को आह्वान किया। उन्हें समझाया कि नियत धन का यदि नियत कार्य में उपयोग नही किया जाता तो, विश्वासघात का पाप लगता है। और देवद्रव्य को अन्यक्षेत्र में वापरना तो घोर पाप है। ऐसी अनेक बातें समझाकर जिन्होंने देवद्रव्य भक्षण के सामूहिक पाप से जैन समाज को बचाया एवं उसकी सुरक्षा हेतु, देशविरति धर्म आराधक समाज की स्थापना करवाई।



वि.सं. 1976 में पालीताणा में छट्ठी आगम-वाचना प्रदान पर श्री ओघ-निर्युक्ति, पिंड निर्युक्ति, भगवतीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र, सामाचारीसूत्र आदि जैन आगमों का 6 माह तक पठन-पाठन करवाया।



जिन्होंने अपने जीवन में एक नियम बनाया था कि जो भी कंठस्थ करना होता... उसे पहले लिख लेना... फिर उस लेखन को सामने रखकर याद करना और वही उनकी निजी ज्ञानपोथी के संग्रह में संभाल कर रख लेना। जितना उन्होंने याद किया... वो सब उनके पास उपस्थित रहता। आज के प्रत्येक ज्ञानसाधक के लिए यह बेहद उपयोगी बात है।



छोटे-छोटे कागज या अखबार के ऊपर के खाली भाग में, जिनकी लिखने की आदत... 'उन्हें श्रुतज्ञान की भक्ति का कुछ लाभ मिला हो...'

ऐसा अपूर्व आनन्द देती... जैसे प्राचीन समय के लहीये/शास्त्र लिखने वाले, त्रिपाठी-पंचपाठी अपने पास रखते थे, उसी तरह इनके पास ये कतरनें होती जिसमें बहुत-सा शास्त्रसंग्रह होता जो मौके पर शास्त्रपाठ के रूप में हासिल हो जाती।



सैलाना चातुर्मास के दौरान सैलाना-नरेश श्री दिलीपसिंहजी जिनके प्रवचन-श्रवण करने पधारते और तब जिनकी तार्किकता, रूपक और सचोट पदार्थ निरूपण से बेहद प्रभावित भी होते, इसका नतीजा यह हुआ कि पर्युषण महापर्व में ''अमारि-प्रवर्तन'' का ऐतिहासिक कार्य हो गया...



सैलाना नरेश ने सर्वधर्म-संगोष्ठी का त्रिदिवसीय विराट आयोजन किया... जिसमें देश के बहुत से स्थानों से अन्य धर्म संन्यासी एवं विद्वान पंडितों को भी आमंत्रित किया गया। उस संगोष्ठी में आत्मवाद, क्रियावाद, अद्वैतवाद आदि अनेक विषय पर आधारित धर्मचर्चा हुई और तब जिन्होने षड्दर्शन और अन्य दर्शन के शास्त्रों की युक्ति से ही जैन धर्म प्राचीनतम है एवं सर्वधर्म-सर्वदर्शनों की जननी है... ऐसा स्पष्ट रूप से साबित कर दिया।



सातवीं आगम-वाचना की सौगात मालवभूमि के रतलाम को प्राप्त हुई, जिसमें श्री भगवतीजीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र समवायांगसूत्र का

अध्ययन-अध्यापन हुआ । इस आयोजन का निमंत्रण... मालवावासी जैन तथा समस्त गच्छ-संप्रदायों की शाखा को भेजा गया । जहां साधु-साध्वीजी के दर्शन भी अति दुर्लभ थे... वहां आगमवाचना की बात लॉटरी लगने के बराबर थी, ज्ञान पिपासु श्रमण-श्रमणी, श्रावक श्राविका गण तथा मुमुक्षुओं ने खूब बढ-चढ कर इस वाचना का लाभ लिया ।



रतलाम आगम-वाचना के दौरान चारथुई श्रीसंघ की व्यवस्था को सुचारु करने के लिए श्री ऋषभदेव केशरीमलजी पेढी की स्थापना करवाई तथा रतलाम एवं आसपास के प्राचीन तीर्थ जिनालय की व्यवस्थाओ की जिम्मेदारी उन्हें सोंपी गई । वहीवट भी समझाया कि कौन-से खाते की रकम... कौन-सी बोली से आती है एवं उसका खर्च कहां किया जा सकता है । कौन-से खाते में से किया जा सकता है ? इत्यादि जानकारी के द्वारा आय-व्यय की शास्त्रीय, शुद्ध परंपरा का अनुसरण सीखाया ।



रतलाम में वाचना के दौरान जिनकी पावन-प्रेरणा से गुजरात के बहुत से दानवीर श्रेष्ठीओं ने वहां के जिनालय जीर्णोद्धार, उपाश्रय, धर्मशाला का नूतनीकरण आदि करवाया और गुजराती श्रावकों की अधिकतम रकम होने की वजह से उनके आगे 'गुजराती-उपाश्रय' शब्द लगाया जो आज भी यथास्थान स्थापित है, और प्रेरक गुरुवर, आगमवाचना एवं गुजरातीओं के दान का साक्षी है ।

68

रतलाम में 6 महिने की आगम-वाचना के बाद ''धर्म की ज्योत'' मालव-माटी में जगमगाने लगी । सुषुप्त संघ जाग्रत बने... गांवो के जिनालयों में पूजा करने वाले पुण्यवानों का आगमन बढ़ने लगा । द्रव्य व्यवस्था समझाने से हिसाब-किताब शुद्ध हुआ ।

69

सैलाना-सेमलिया-पंचेड के विधर्मी राजा जिनके प्रभाव तले अपना जीवन परिवर्तन करने लगे । सैलाना नरेश दिलीपसिंहजी ने प्रतिदिन के प्रवचनों का लाभ लेते हुए हिंसा-पाप-व्यसन आदि का त्याग किया एवं गुरुवर से कुमारपाल, हेमचंद्राचार्य जैसा घनिष्ठ संबंध जोड लिया । गुरु-उपकार के ऋण को अदा करने के लिए अकबर बादशाह की तरह 6 महिने का अमारि-प्रवर्तन का फरमान जारी किया । जाजरमान गुरु सत्कारयात्रा का आयोजन कर पूरे राज्य की जनता को पधारने का आमंत्रण देकर पूरी राज्यसभा में उच्चस्थान पर बिराजमान कर अमारी पट्टक अर्पण किया । राज व्यवस्थापकों को इसकी जानकारी देकर एक प्रतिलिपि गुरुभगवंत को समर्पण कर... अन्य नकल जागीरदारों को पहुंचाई । कठोर मर्यादा पालन का हुकम दिया और सत्कार समारंभ पश्चात् समूह भोज करवा कर हजारों की जनमेदिनी के साथ राजा स्वयं 3 माईल छोडने गए ।

70

वि.सं. 1978 के रतलाम चातुर्मास में जिन्होंने मालवा के सर्वप्रथम बार उपधान तप दशहरा से आरंभ करवाए... जिसमें बडी संख्या में श्रावक-श्राविका जुडे ।



मालवा के धार-राजगढ-भोपावर-उज्जैन तथा आस-पास के ग्राम्य क्षेत्र में विचरण कर मूर्ति पूजा एवं चारथुई शास्त्र संमत है ऐसा सिद्ध किया।



मालवा की प्रजा को प्रवचन के माध्यम से सन्मार्ग बताया, कितने ही पाखंडियोंने मंदिर के द्वार ही बंद करवा दिए थे, उन्हें तार्किकता से मूर्तिपूजा योग्य है एवं स्थापना-निक्षेप के बिना पदार्थ की सिद्धि नहीं है ऐसा समझाकर जिन्होंने उनकी आस्था का पुन: जीर्णोद्धार करके मंदिर के द्वार खुलवाये और मूर्तिपूजा की पुन: प्रतिष्ठा हुई।



भोपावर तीर्थ में प्रथम बार जाने पर ही जिन्हें अधिष्ठायक देव ने स्वयं आकर कहा कि, ये शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ के समकालीन है। अर्थात् 84,000 वर्ष प्राचीन है, और तीर्थ का प्रभाव अप्रतिम है। यह सुनकर जिन्होंने इस तीर्थ की महिमा को खूब बढाया जिससे भक्तों का आवागमन शुरु हुआ। श्री शांतिनाथ जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट की स्थापना कर जीर्णोद्धार शुरु करवाया। जिनकी पावन प्रेरणा से सूरत निवासी कंकुबाई ने स्वद्रव्य से राजगढ में यात्रिकों के लिए धर्मशाला बनवाई एवं शासक श्री जीवाजीरावरसिंहजी ने सरदारपुर से भोपावर का पक्का मार्ग तथा बीच में आनेवाली नदी पर पुल बनवाया।

74

जिन के द्वारा मालवा में जगह-जगह पर जिनालय उपाश्रय आदि के लिए मुम्बई गोडीजी, आणंदजी कल्याणजी पेढी तथा अहमदाबाद के संघो को प्रेरित कर बहुत सारा द्रव्य जीर्णोद्धार में लगवाया गया। जिससे मालवा की मनोहरता में निखार आया । मृतप्रायः बना मूर्तिपूजक समाज... प्राणवंत बना। आज मालवा में मूर्तिपूजक समाज को अज्ञानता के अंधकार से बचाने में पूज्यश्री तथा उनके समुदाय से पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंतो का योगदान अनन्य है।

75

वि.सं. 1979 में जिनका चातुर्मास पुनः रतलाम में हुआ और तब रतलाम की संस्थाओं के बीच विवादों का निवारण करवाया । अपने प्रवचन के जादू से गच्छवाद-संप्रदायवाद को भुला दिया और पुनः जिन्होंने पिछले साल से दुगुनी संख्या में आराधकों को उपधान तप करावाया।

76

सूरत के कॉलेज प्रोफेसर हीरालालजी कापडिया को शास्त्र अवगाहन करते समय 108 प्रश्न हुए तब जिन्होंने उनके प्रश्नों का समाधान मात्र 3 घंटे में साक्षीपाठ सहित कर दिया। जिससे एक प्रोफेसर भी जिनकी प्रज्ञा के किंकर बन गए।



सेमलिया और पंचेड नरेश ने भी जिनका प्रभावक प्रवचन श्रवण कर अपने-अपने नगर में 6 महिने तक अमारि-प्रवर्तन का फरमान जारी किया।



रतलाम में जैन छात्रालय की नींव भी जिनकी प्रेरणा से रखी गई एवं वहां के छात्रों के लिए आवास की व्यवस्था भी करवाई गई।



मांडवगढ तीर्थ की आशातना देखकर जिन्होंने खुमारी से उसका प्रतिकार किया... तब धार-नरेश ने राजमहल में जाहिर सभा में जिन्हें तीर्थ व्यवस्था, तीर्थरक्षा, सुन्दर रीति से होगी ऐसा आश्वासन दिया।

जब यहां भी पर्यटन स्थल बनाने का हुक्म आया तब इस तीर्थ की ऐतिहासिकता के प्रमाण देकर... तीर्थ के प्रति... पवित्रता के भाव को जगाया एवं अधिकारियों को अपना निर्णय बदलना पडा।



रतलाम में त्रिस्तुतिक मत के अनुयायी श्री यतीन्द्र विजयजी ने जिन से बहुत-सी प्रश्नोत्तरी की... पश्चात् जब जाहिर शास्त्रार्थ हुआ तो शास्त्रपाठ ज्ञाता गुरुवर के समक्ष शास्त्र और परंपरा की बात सिद्ध नहीं हुई... तब अपूर्णवाद में ही श्री यतीन्द्रविनयजीने विहार कर दिया।

81

मालवा के अज्ञानता का अंधकार दूर करने के लिए सुन्दरबाई ओसवाल स्कूल, इन्दौर की प्राध्यापिका सुश्राविका मिश्रीबहन को 'पराए गहने से कब तक श्रृंगार करोगी ?' जिन्होंने ऐसा मार्मिक वचन बोलकर संयम के लिए प्रेरित किया और तब उस बहिना के ''मालवा में साध्वीजी भगवंत भी प्रवचन दे सकते है यदि आप ऐसा वचन दें तो में दीक्षा लूं ?'' ऐसा कहने पर, दूरदृष्टा गुरुदेवने अनुमति दी। परिणामस्वरुप, मालवा की धरती पर वि.सं. 1984 में प.पू.पंन्यासश्री विजयसागरजी के करकमलों से रजोहरण प्राप्त कर... सर्वप्रथम साध्वीजी बनने का सौभाग्य मिश्रीबहन को प्राप्त हुआ।

वे पू.सा.श्री तिलकश्रीजी की सुशिष्या मनोहरश्रीजी के रुप में सर्वविरतिधर बने। आज 97 साल में मालवभूमि ने 500 से अधिक साधु-साध्वीजी की भेंट सागर समुदाय में दी है।

82

कल्याणक भूमिओं में विहार कर के जिन्होने उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल के अल्पसंख्यक जैनों में सूख चुकी धर्म-सरिता को पुनः 'बहती-नदी' का स्वरुप दे दिया।

83

बनारस के हिन्दु विश्व विद्यालय में रत्नाकरावतारिका-ग्रंथ के आधार पर साहित्यिक भाषा में न्याय से भरपूर, संस्कृत भाषा में जिन्होंने धारा-प्रवाह मेघ की तरह बरसकर विद्वान श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर

दिया और विद्यालय के पंडितों द्वारा विनंति होने पर पुनः 2 दिन तक स्यादवाद विषय पर सरल संस्कृत भाषा में व्याख्यान कर... "हमसे अच्छी संस्कृत किसी की भी नहीं है..." ऐसा उनका घमंड उतारकर, अपने शिष्यों को भी आश्चर्यचकित कर दिया।



विश्वविद्यालय के कुलपति पंडितवर्यश्री दलसुखजी मालवणियाजी भी अपनी समस्याओं का समाधान भी जिनसे प्राप्त करते... षट्दर्शन, स्याद्वाद, आत्मवाद, अनेकान्तवाद आदि विषयों को गहराई से समझते और आठ भवों के काम एक भव में करनेवाले ऐसे पूज्यश्री की पहचान जन-जन को करवाते एवं अपने मानस-पटल पर छाई पूज्यश्री की प्रतिकृति को लोंगो में प्रसिद्ध करते।



बंगाल में भी... पाश्चात्य हवा से प्रभावित जैनों को अपने प्रभावक-प्रवचनादि एवं पवित्र आचरणों के द्वारा जिन्होंने पुनः धर्माराधना में स्थिर किया एवं उनके द्वारा सुन्दर शासन-सेवा करवाई।



जो अपने शिष्यवर्ग में वर्षीतप आदि दीर्घ तप की सहमति 5 शर्त पर देते -

1. धार्मिक क्रिया-अनुष्ठान में शिथिलता नहीं मानी चाहिए।

2. गुरुजनों की भक्ति-वैयावच्च में कमी नहीं आनी चाहिए।

3. पारणे में लंबा विहार करने की हिम्मत रहनी चाहिए।

4. तपस्या के निमित्त दोषित आहार-पानी का उपयोग नहीं होना चाहिए।

5. श्रावक वर्ग को तप की जानकारी नहीं होनी चाहिए।

87

जिन्होंने अपने संयम जीवन के 53 वर्ष तक पंचमी, दो चौदस के नित्य उपवास किए। 55 साल तक एकासने किए... ये तपस्याएं करने के बावजूद... दैनिक आवश्यक कार्य, शास्त्र-स्वाध्याय आगम संशोधन, शासन-प्रभावना किसी कार्य में कभी कमी नहीं आने दी।

88

हिन्दुस्तान के व्यापार का मुख्य केन्द्र कलकता में जैन श्री संघ के पास आराधना योग्य उपाश्रय नहीं था तब जिन्होंने वहाँ पधारकर सर्वप्रथम उपाश्रय का महत्त्व समझाकर कहा कि यदि आपको प्रभु वीर की विरासतों को तरोताजा रखनी हो, तो यहां विशाल उपाश्रय एवं मंदिर का निर्माण करना चाहिए...

बस इतनी-सी प्रेरणा दी और 10/15 मिनिट में 1 लाख रुपए इकट्ठे हो गए... जो आज के करोड़ो-करोड़ो रुपए के बराबर है। फिर भव्य उपाश्रय का निर्माण केनिंग स्ट्रीट, बड़ाबाजार, कलकत्ता में हुआ।



बंगाल का जैन समाज गुजराती भाषा से अनजान होने की वजह से... जैन समाज की साहित्य सेवा एवं श्रुतज्ञान की विशालता का अंदाजा देने के लिए... हिन्दी जैन साहित्य संस्था की स्थापना का उपदेश जिन्होंने ''पाषाण को भी पानी बनानेवाली वाणी'' से दिया। जन-जन के मन में ऐसा जादू छाया, उस जमाने में 10,000/- की राशि तुरंत इकट्ठी हो गई। जिससे, विराट उपाश्रय में सुन्दर ज्ञानभंडार का निर्माण हुआ। जिसका नाम, अपने संयमी बडे-बंधु के उपकारों की स्मृति में श्रीमद् मणिविजयजी ज्ञान भंडार रखा गया और उसके द्वारा हिन्दी साहित्य प्रकाशन की सुचारु व्यवस्था की गई।



जिनके प्रतापी पुण्य से अंतिम 600 साल में बंगाल में जो धर्मोन्नति नहीं हुई उससे अधिक धर्मोन्नति 5 से 6 माह के अल्प समय मे हुई। हीरसूरिजी म. दिल्ली तक पधारे पर बंगाल ना पधार सके। पर उनके जैसी धर्मप्रभावना शासनप्रभावना बंगाल पधारने से हुई। जिसके फलस्वरुप कलकत्ता प्रवेश में जो सत्कार हुआ... उससे दुगुना औचित्य एवं भव्यता वहां से विहार के समय दिखी। 3000 मानवमेदिनी के साथ विहार यात्रा प्रारंभ हुई।



कलकत्ता से निकली विहार-यात्रा, सेठश्री लक्ष्मीचंदजी के बंगले पर पहुंची। 2 दिन की स्थिरता में दोंनो दिन 3-3 समय 5000 व्यक्तिओ की

साधर्मिक भक्ति श्रेष्ठीवर्य ने बडे उल्लासपूर्वक की... जो कलकत्ता के इतिहास में न भूतो न भविष्यति, ऐसी घटना बनी।

बंगाल-विहार-यात्रा के दौरान, बहुत से जैनों ने जिनके तत्वज्ञान-पूर्ण प्रवचन सुनकर यथाशक्ति व्रत-पच्चकखाण लिए... एवं जैनत्व में स्थिर बने।



अजीमगंज के नगरसेठ के पुत्र को जिन्होंने सम्यकत्व की सुरक्षा एवं आर्तध्यान से बचाने के लिए... अपने संयम के प्रभाव से सर्प-भय से मुक्त किया। जिससे उसकी एवं परिवार की शासन के प्रति श्रद्धा प्रबल हुई। उनके पास कोई जादू-टोना नहीं था केवल संयम का अप्रतिम प्रभाव था।



बंगाल चातुर्मास पश्चात् चंपापुरी-भागलपुर-क्षत्रियकुंड आदि तीर्थ की स्पर्शना करते हुए जिनका शिखरजी तीर्थ में आगमन हुआ। तब तीर्थ की जर्जरीत हालत देखकर जिनके हृदय में तीर्थोद्धार का बीजारोपण हुआ। जो आगे चलकर उनके ही आज्ञानुवर्तिनी सा.श्री रंजनश्रीजी के हृदय में अंकुरित हुआ... उदार हृदय श्रावकों को कहकर 25 देहरी का जीर्णोद्धार करवाया एवं जलमंदिर का निर्माण करवाया। जिसकी अंजनशलाका-प्रतिष्ठा सागर समुदाय के आद्य गणनायक पू.आ.श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी के वरद हस्तों से हुई।

आज जो स्थापत्य हमें दिखाई दे रहा है उसमें उन श्रमणीवर्या पू. रंजनश्रीजी का असीम-उपकार है।



जिन्होंने दिगंबर तथा तेरापंथी श्रमणों से भी मुक्तमन से धर्मचर्चा कर श्वेतांबर आम्नाय तथा मूर्तिपूजक संप्रदाय की सामाचारी शास्त्रसिद्ध साबित की।



राजस्थान में एक रुग्ण (बीमार) मुनि से जब मिलना हुआ और देखा तो वे अपने शिष्य को लेकर बेहद चिन्तित नजर आ रहे थे । तब जिन्होंने उनके शिष्य को जीवन पर्यन्त अपने साथ रखा और शिष्य को संयम में स्थिर करके... उनके गुरुजी को अपूर्व समाधि-दान देने का सौभाग्य प्राप्त किया।



शत्रुंजय की यात्रा के लिए वर्षों पहले पालीताना के राजा ने हर साल 10,000/- का Tax मांगा... यह Tax आने वाले यात्रिकों से लेना यह भी तय किया गया । तब जिन्हे यह विचार आया कि मध्यम और निर्धन यात्री यह Tax कैसे भर पाएगें ? और यदि नहीं भर पाए तो यात्रा से वंचित रह जाएगें ।

इसलिए... समस्या के स्थायी समाधान के रुप में जिन्होंने संघ समक्ष स्थायी-निधि की योजना बनाई... इतना ही नहीं प्रेरणा करने पर अहमदाबाद के श्री संघ ने 4 लाख... चांदी के सिक्के एवं भारतभर के अन्य संघो ने मिलकर 8 लाख चांदी के सिक्के कुल मिलाकर 12 लाख रजतमुद्राएं इकट्ठी कर दीं ताकि हर साल राजा को 10,000/- मिलते रहे और जैनों की यात्रा निराबाध चलती रहे...



12 लाख रौप्यमुद्रा की महानिधि श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी को सुपुर्द की गई । किन्तु आजादी के बाद... जब भारत में लोकतंत्र की शुरुआत हुई तो कस्तुरभाई लालभाई ने सरकार से मिलकर, यात्रा-कर माफ करवा दिया। अब इस रकम का क्या करना ? ऐसा प्रश्न उठने पर जिन्होंने यह विकल्प दिया कि, यह तीर्थ ही खरीद लिया जाए जिससे भविष्य में कोई तकलीफ ही ना आए । पर जब यह संभव नहीं हो पाया तो... जिन्होंने गिरिराज पर सीढियां बनाने का सुझाव प्रस्तुत किया... उसे सभी ने मान्य किया । उसी की बदोलत आज गिरिराज की यात्रा सुखरुप हो रही है ।

जब भी हम गिरिराज पर चढें तब दादा आदिनाथ के साथ पू. आगमोद्धारकश्री का भी स्मरण करना चाहिए ।



जैन तीर्थ माउण्ट-आबु-देलवाडा में श्रद्धालु-श्रावकों ने सुरम्य बेनमून/बेजोड आश्चर्यकारी जिनमंदिर बनवाए... पर काल के दुष्प्रभाव से 20वी शताब्दी के प्रारंभ में कला-संरक्षण के बहाने उन मंदिरों को स्वायत्त (स्वाधीन) करने की मलिन भावना अंग्रेज-शासकों के मन में जागी ।

तब जिन्होंने वाइसरॉय से बडी चतुराई एवं होशियारी से यह समझाया कि -

तीर्थभक्ति/सुरक्षा के सुन्दर संस्कार हमारे पूर्वजों ने हमें प्रदान किए है जिससे यदि हम 12 लाख जैनों से अपील करेंगे तो भी 12 लाख मिल जाएगें, कहीं आर्थिक समस्या नहीं है... अरे ! उससे भी ज्यादा रकम

इकट्ठी करके तीर्थयात्रा करने मे समर्थ है । अत: तीर्थ की आप चिंता ना करें । ऐसा कहकर वाइसरॉय को वहां से विदा किया । इस तरह जिनकी दूरदर्शिता और सुश्रावक लालभाई के प्रयत्न से आबु तीर्थ की सुरक्षा हुई ।



जन-जन की आस्था के केन्द्र एवं श्वेतांबरो का जिस पर मालिकाना हक है ऐसे केशरियाजी (धुलेवा) तीर्थ पिछले कई वर्षो से, दिगंबरो ने विवाद करना चालू कर दिया था... इस बीच पू. गुरुदेवश्री का तीर्थ में आगमन हुआ उस समय जिनमंदिर का ध्वजदंड जीर्ण हो गया था... पुन: प्रतिष्ठित करना था मगर दिगंबर लोग रुकावटें डाल रहे थे...

तब विरोध की परवाह किए बिना साहस के साथ... बहादुरीपूर्वक... ध्वजदंड प्रतिष्ठित करवाया एवं श्वेतांबर जैनों को अन्याय से बचा लिया ।



जिन्हें मारने के लिए अनेक मंत्र तंत्र के प्रयोग भी हुए पर जिनके संयम-प्रभाव से कोई भी प्रकार की शक्ति काम नहीं कर पाई... एक बार श्रोतागण के साथ प्रवचन-मंडप में पधार रहे थे । मांस का अभिमंत्रित पिंड बीच रास्ते में देख 'समयज्ञ' पूज्यश्री ने हिम्मतवान सुश्रावक को बुलाकर उस पिंड को दूर फेंककर उस पर अशुचि करने को कहा... और इस तरह वह पिंड और वह प्रक्रिया निष्फल हो गई... शक्तिशून्य हो गई...।



वि.सं. 2005 के आस-पास अंग्रेजो ने जब कूटनीति के प्रयोग चालू किए तो उस बहाव में जैनयुवाओं का एक ऐसा वर्ग भी तैयार हो

गया जो यह कहने लगा कि, उपधान, उद्यापन, स्वामीवात्सल्य, प्रतिष्ठा जैसे कार्य-व्यर्थ है और संघो में जो देवद्रव्य की राशि है उससे समाज-सेवा, विधवा-विवाह, आधुनिक शिक्षण प्रदान जैसे कार्य होना चाहिए। मंदिर-मूर्ति-शास्त्र की बातें अंधश्रद्धा है । बालदीक्षा-अयोग्य है । इस तरह के अनेक विषयों को लेकर इन युवाओं ने जैन श्वेतांबर कॉन्फ्रेन्स नामक संस्था बनाई और सबसे पहले दीक्षा प्रतिबंध का कायदा बनवाया। इसके प्रतिकार और प्रत्युत्तर स्वरुप जिन्होंने भोंयणी तीर्थ में श्री देशविरति धर्माराधक समाज का संमेलन करवाया ।

एवं उपरोक्त विचारों से जिन शासन को होनेवाली हानि, अशास्त्रीयता एवं अनंतानंत भव तक मिलनेवाली दुर्गति, आदि भयस्थानों को समझाया और जनजागृति अभियान चलाकर प्रतिपंथियों को परास्त किया ।



अहमदाबाद में श्रुतज्ञान के प्रति श्रमण एवं श्रावक संघ की उदासीनता देखकर, जिन्होंने श्रुतज्ञान को सृष्टि पर जीवंत रखने के लिए समग्र भारतभर के ज्ञानभंडार में मौजूद... प्राचीन-विशिष्ट सचित्र-साहित्यग्रंथो को मंगवाकर... जैन साहित्य प्रदर्शन का विशाल आयोजन किया ।

जिससे हजारो/लाखों लोगों ने जिनशासन की अनमोल-अमूल्य वैभवशाली विरासत को निहारा और लोकहृदय में अपार श्रुत भक्ति जागी फलतः श्रुत के प्रति दृष्टि भी बदली और दान प्रवाह भी बढ गया ।



स्वयं के फोटो/प्रतिकृति के प्रति जो भारी उदासीन थे । जिन्होंने एक दिन स्वयं का फोटो देखकर नाराज होकर उसे उतरवाया और एक बात स्पष्ट रुप से समझाई फोटो मानव को व्यक्तिरागी बनाता है एवं अहं का पोषण करता है। ये फोटो-संस्कृति अमारे आर्य-संस्कृति को बहुत नुकसान पहुंचाएगी। याद रहे, तीर्थंकर की मूर्ति वीतरागता का साधन है जबकि स्वयं के फोटो राग का साधन है । आज जब Selfy का जमाना है ऐसा वैराग्य-मिलना मुश्किल है।



जिन्होंने कभी अपनी 'नामना की कामना' नही रखी, जो अपना नाम मंदिर-उपाश्रय तो क्या ज्ञानमंदिर-भक्तवर्ग या किसी गांव-जिले के किसी भी स्थापत्य में लिखवाना पसंद नहीं करते थे...

जो यह मानते थे कि यदि निजी मालिकी का उपाश्रय होगा तो संघो में विभाजन होगा, ममत्व बढेगा, नया संसार सृजन होगा और स्वयं के उपाश्रय के अतिरिक्त अन्य उपाश्रय में जाने का मन ही नहीं होगा । स्थिरवास का मन भी होगा ।

याद रहे, संयम जीवन त्याग की आग जैसा है उसे राग के अनुबंध का झरना बुझा ना दे... इसके लिए वे हमेशा जाग्रत रहते थे ।



वडोदरा बाल दीक्षा Act, देवद्रव्य एवं शासन के ढेर सारे प्रश्नों के समाधान हेतु श्रावकों/श्रमणों को जो निरंतर मार्गदर्शन देते रहते । ये

मार्गदर्शन दूर-सुदूर रहते जिज्ञासु भी प्राप्त कर सके इसलिए सिद्धचक्र नामक मासिक पत्र का आरंभ हुआ जिसमें प्रवचन-चिंतन-शास्त्र चर्चा-प्रश्न-समाधान... सुन्दर वाक्य... आदि पदार्थो की मुख्यता थी।



देवद्रव्य, बालदीक्षा, मालारोपण तिथि-चर्चा, तीर्थ-सुरक्षा आदि बाहरी एवं भीतरी कई विषयों को लेकर कई पूज्यों में असमंजस रहता था... तब... श्रीसंघ की विषमता का निवारण कर एकता के पवित्र आशय से राजनगर अहमदाबाद में एक 'श्रमण-संमेलन' का आयोजन हुआ और नगरसेठ कस्तुरभाई लालभाई की अगुआई में जो सर्वाधिक शास्त्रपाठ देकर संमेलन को सफल बनाने में निमित्त बने।



'ज्ञानभंडार के ग्रंथो में गलतियां हो सकती है पर स्मरण शक्ति में नहीं' ऐसा जिनके बारे मे विश्वासपूर्वक कहा जाता था। इसीलिए जिन्होंने अपने संशोधन के अर्थ में बार-बार तत्वं केवलीगम्यं नही लिखा... क्योंकि जहां विश्वास है वहां प्रश्न चिन्ह क्यों ?

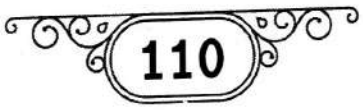


एक बार 1000 वर्ष प्राचीन कुछ अतिजीर्ण-ताडपत्रीय प्रति और कागदीय अलभ्य प्रति प्राप्त हुई, वह लंबेकाल तक रहे, ऐसी संभावना कम ही लग रही थी। तब जिन्होंने आगमों की सुरक्षा के लिए -

'महाराजा खारवेल के शिलालेख, महाराजा संप्रति के शिलालेख' आदि को आधार बनाकर आगमों को शिलोत्कीर्ण करने का आश्चर्यकारी... आनन्दकारी विचार किया और उन आगमो को संभालने के लिए आगममंदिर की मनमोहक कल्पना भी की। इस तरह, जिन्होंने आगमों को दीर्घजीवी बनाने का प्रयास किया... उन्हें अपार नमन।



आज से प्राय: 80/85 वर्ष पूर्व लाखों रजतमुद्रा लगवाकर पालीताणा का आगम मंदिर निर्मित करवाया। जिसकी प्रतिष्ठा महोत्सव में प्राय: 18 दिन तक पालीताणा के 10,000 घरों में... चौके-चूल्हे बंद रहे और गांव का स्मशान भी बंद रहा... ये एक चमत्कारिक घटना थी और 20वीं शताब्दी का यह महामहोत्सव था।



20वीं शताब्दी में 2500 जिनप्रतिमा एवं 1452 गणधर भगवंतो का एक साथ अंजन एवं प्रतिष्ठा करने वाले वे एकमात्र आचार्य भगवंत थे।



शारीरिक कारणों से कभी कोई दोष सेवन करना भी पडे तो उसके प्रायश्चित में उपदेशाला सटीक जैसे ग्रंथ मंगवाकर शास्त्रपद्धति-अनुसार स्वाध्याय रूप अभ्यंतर-तप करके जो हमेशा आलोचना करते।



गोधरा में स्थिरता दौरान वहां 60 साल पुराना विवाद सुलझाकर, दोनो पक्षों में शांति स्थापित कर वहां पर जिन्होंने श्री शांतिनाथ जैन पेढी की स्थापना की।



जिन्होने कभी सूरिमंत्र की पीठिका की आराधना नहीं की, जाप मंदिर नहीं बनवाए, माला भी नही फेरी। फिर भी एकमात्र अजपाजाप एवं संयम के प्रभाव से जीवन मे अद्भूत सिद्धियां स्वयं ने पाई एवं अन्यो को भी उससे लाभान्वित किया।

उदाहरण के तौर पर खीमचंद नाम के बाल-श्रावक का कोढ रोग दवाई, वैद्यराज या बहुत से उपचार करने पर भी नहीं मिटा वह एकमात्र जिनकी अनुपम करुणा से मिश्रित उसी दवाई से मिट गया।



जो कभी सिद्धि के पीछे नहीं भागे, फिर भी सिद्धियां उनके कदमों मे खेलती थी।



सूरत में जिनकी स्थिरवास करने की इच्छा होने पर भी कुछ सांप्रदायिक द्वेषी द्वारा यहां स्थिरता न करे... उनके लिए... पुलिस की टुकडी को उपाश्रय में भेजा, योगानुयोग चौदस के प्रतिक्रमण में जहां

''झंकाराराववसारा'' पद सुना और पुलिस तो भयभीत होकर वहां से तुरंत रवाना हो गई। इस तरह स्वयंभू दुष्टतत्वों को दूर करने में जिनका पुण्य अचिन्त्य था।



पाक्षिक प्रायश्चित पूर्ण करने हेतु स्वाध्याय के प्रति जिनकी अभूतपूर्व जागृति थी जो हम जैसे प्रमादी लोंगो के लिए बहुत बडा आदर्श है। अनेक प्रकार के शासन के कार्यों मे मौलिक स्वाध्याय का जब समय नहीं रहता तो-

चौदस के प्रतिक्रमण में जब श्रावक अतिचार बोलते है, तब उतने ही समय में वे योगशास्त्र के ''4 प्रकाश एवं हरिभद्र अष्टक के 32'' अध्ययन का स्वाध्याय वे कर लेते।



अपने चतुर्विध संघ के योगक्षेम की भी जिन्हे हमेशा कामना रहती - जब दूसरा विश्वयुद्ध हुआ और हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के रुप में भारत के दो विभाग हुए-महामारी भी उस समय चल रही थी तब पाकिस्तान में पू. वल्लभसूरीश्वरजी म.सा. आदि एवं सा. भगवंत श्री दमयंतीश्री म.सा. आदि पूरा जैन संघ आपदा में उलझ गया।

ऐसे मुश्किल हालातों में उन सभी को सावधानीपूर्वक भारत में लाने के लिए जिन्होंने कस्तुरभाई लालभाई को प्रबल प्रेरणा देते हुए कहा कि एक जैनाचार्य मुसीबत में हो और आप जैसे सुश्रावक के गले में भोजन बड़े आराम से उतर जाए यह कैसे मुमकिन है ? इस तरह से सूचित करके सेठश्री के द्वारा वल्लभभाई पटेल को संपर्क करके उन्हें भारत में लाने की

व्यवस्था करवाई एवं... उसके लिए जिन्होंने एक सभा का आयोजन करवाया, विशाल-फंड इकट्ठा कर अहमदाबाद पहुंचाया और वहां के प्रतिष्ठित श्रावक पाकिस्तान पहुंचे, उन सभी को पूर्ण सुरक्षा के साथ भारत की धरती पर अमृतसर में लाए... तब जाकर, जिन्हें तसल्ली हुई।



एकबार अखबार में कुछ इमारतों के सहसा गिर जाने के समाचार आए... उन्हें पढकर जिन्हें आगम सुरक्षा की चिन्ता हुई कि-

यदि भूकंप में इमारतो को नुकसान पहुंच सकता है तो शीलोत्कीर्ण आगममंदिर का भी नाश हो सकता है यदि हजारों वर्ष तक आगमों को नाश होने से बचाना है तो उन्हें धातु पर लिखवाना होगा, तब कई म्युजियम के प्राचीन धातु-प्रतिमा पर लिखे लेख, ताम्र शिलालेख आदि देखकर जिनका यह विचार परिपक्व बना जिसके फलस्वरुप सूरत में ताम्रपत्रीय आगममंदिर का निर्माण हुआ। मात्र 270 दिन में तीन मंजिला जिनालय के रुप में 45 आगमो से युक्त, 45 गवाक्ष से मंडित 45 सोपान से सुभोभित, 45 अंगुल प्रमाण मूलनायक श्री महावीर स्वामी से सुशोभित हुआ। 120 जिनबिंबो का प्रतिष्ठा प्रसंग सूरत के इतिहास में स्वर्णाक्षर में अंकित हुआ। आगम पुरुष की अद्भूत कल्पना भी सर्वप्रथम जिन्होंने की एवं जिनमंदिर+जिनवाणी के संयोजनवाले आगम मंदिर की की कल्पना भी जिन गुरुदेव ने की थी।



शासन-समुदाय-गच्छ की प्रभावना के अधिकांश कार्य के साथ-साथ, जिन्होंने आत्मिक आराधना-आत्मजागृति आदि की साधना तो

की परन्तु जिनका मुख्य लक्ष्य ''समाधि प्राप्ति'' होने से ''प्रवृत्ति प्रधान धर्म से निवृत्ति प्रधान परिणति'' बढाने का प्रबल पुरुषार्थ किया । आत्मदशामय जीवन जीने के लिए... शिष्य-प्रशिष्य समुदाय की जिम्मेदारी तथा प्रभावकता से लगाकर प्रायश्चित तक की सारी जिम्मेदारी जिन्होंने पट्टप्रभावक पू.आ.श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी म.सा. को सुपुर्द की।



अपना अंतिम समय सम्पूर्ण आराधनामय रहे... इसलिए जिन्होंने अपने मन को संपूर्ण समाधिस्थ किया । अधिक से अधिक जाप/ध्यान/स्वाध्याय में तल्लीन बने। प्राचीन ग्रंथो के वांचन-मनन एवं निदिध्यासनपूर्वक नए ग्रंथो की रचना भी अविरत करते रहे।

शारीरिक अस्वस्थता में भी मानसिक प्रसन्नता से ओत-प्रोत रहे और अंतिम अवस्था में स्वस्थता का बयान करता हुआ 'आराधना-मार्ग' नामक ग्रंथ बनाकर तो उन्होंने सचमुच कमाल कर दिया।

जीवन की चरम दशा में श्री परम के ध्यान में रहकर उत्तम लाभ प्राप्त किया।



अंतिम समय में शिष्य, स्थापत्य आदि किसी पर भी मोह ना हो इस बात की सावधानी रखते हुए जो बार-बार 'धन्यास्ते सनत्कुमाराद्यो' एवं 'नो जगत् त्वं नो ते जगत्' ऐसे वैराग्य सभर भावों का उच्चारण करते-रहते और मन को शुद्धि ताजगी से परिपूर्ण रखते। भक्तों और शिष्यों के समक्ष स्पष्ट कह भी दिया था कि पंचमी की छठ नहीं होगी।



अंतिम 15 दिन जिन्होंने अर्धपद्मासन अवस्था में बीताये, प्रतिक्रमण-प्रतिलेखनादि आवश्यक क्रिया के सिवाय रात्रि संथारा शयन का त्याग करके, आत्मचिंतन कर जिन्होंने अपनी विदाई वेला में व्यक्त जीवन का अव्यक्त बोध दिया।

मिति वैशाख वदी पंचमी के तीसरे प्रहर में 4 बजकर 32 मिनिट पर सद्गति की और महाप्रयाण किया... इससे पूर्व चतुर्विध संघ से क्षमाचायना करके महामंत्र का स्मरण करते-करते पवित्र भावों के मानसरोवर में राजहंस की तरह विचरण कर रहे थे। यूं कह सकते हैं कि जिनशासन का राजहंस अपने कर्तव्य पूर्ण करके सद्गति में प्रस्थान कर गया।



प्ररुपणा जिनकी सिद्धांतमय, जिंदगी जिनकी प्रभावकतामय और मृत्यु जिनकी समाधिमय थी।



अंतिमयात्रा के लिए जिन महापुरुष के नाम और पवित्र काम के अनुरुप 15 सुतारों के द्वारा एक ही रात्रि में नवशिखरीय देव विमान स्वरुप पालखी बनवाई गई। जिसे 100 व्यक्तिओ ने उठाया था, 5000 से भी अधिक जनमेदिनी ने जय-जय नंदा, जय-जय भद्दा का घोष किया था, गोपीपुरा के मध्य चौक में उस पालखी को रखा गया और वैशाख

वद (राज. जेठ वद) 6 के दिन जिनके पुण्यपिंड का विलय हुआ।

शहर के बीच में अग्निसंस्कार करने की अनुमति नामुमकिन थी मगर जब उनके प्रभाव-प्रतिभा को कलेक्टर ने जाना तो अनुमति दी एवं रेड लाईन से अंडरलाईन करके भविष्य में ऐसी अनुमति नहीं देने का जिक्र भी किया।



जिनके द्वारा समझाई गई तिथि सत्यता की बात आज 8000 से ज्यादा साधु-साध्वीजी स्वीकार करते है। और देवसूर सामाचारी की उज्जवल पर्वतिथि की परंपरा का अनुसरण करते हैं।



जिनके जीवन में ये नियम 'संयम-अलंकार' की तरह शोभा दे रहे थे...

1. डोली का उपयोग नहीं करना।
2. जाप, माला से नहीं किन्तु उंगलियों से ही करना।
3. कभी फोटो नहीं खिंचवाना और कोई फोटो ना खींच ले, इसलिए गर्दन हमेशा झुकी हुई रखना।
4. सर्दी की व्याधि के कारण छींकणी (नासका) सुंघते थे परन्तु व्यसन नहीं था इसलिए वर्ष में एक महिने उसका त्याग करते थे।
5. चातुर्मास की जय फा.सु. 14 के पहले नहीं बुलवाते क्योंकि शासन के काम कभी भी आ सकते हैं।

6. आगम के इतने कार्य होने बाद कभी दीपक या उजेही का उपयोग नहीं किया।
7. कभी सहारा/टेका नहीं लिया।
8. गौचरी में कभी 'आधाकर्मी' दोष का सेवन नहीं किया।
9. गौचरी में स्वाद-की-चर्चा, किसी को भी नहीं करने देते।
10. विहार में कभी पैरो में कपडे के मोजे का भी उपयोग नहीं किया।
11. अन्तिम समय तक सुदी पंचमी, सुदी चतुर्दशी वं वदी चतुर्दशी ये तीन उपवास तो हर माह में अवश्य करते।



जिन्होंने कपडवंज की धन्यधरा को स्वयं के अवतरण से पावन किया और सूरत शहर, सूरत जिला, दक्षिण-उत्तर गुजरात के परगना (कस्बाई) पंथक, मुंबइ, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल और मेवाड-मालवा प्रदेश सहित अनेक क्षेत्रों को स्वयं के विचरण और धर्म संस्करण से धन्य कर दिया।



उदाहरण के तौर पर... मेवाड-मालवा क्षेत्र को गुरुवर वादी विजेता झवेरसागरजी म.सा., ज्ञानतीर्थ आगमोद्धारक गुरुदेव श्री आनंदसागरसूरिजी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणी गण ने आभाव्य-व्यवस्था को न्याय देते हुए पिछले 150 वर्षों से संभाला है। सही मायने में... इन क्षेत्रों मे सागर समुदाय का महान-उपकार रहा है। ये गुरुदेव मार्गदाता, समकित दाता, ज्ञान दाता, संयमदाता है एवं शास्त्र-परंपरानुसारी आचार-विचार के मार्गदर्शक भी है। यही वजह है मालवभूमि में जिनालय, उपाश्रय, ज्ञानभंडार, पाठशाला आयंबिल खाता

भोजनशाला, संघ-पेढी, सम्यग्ज्ञान मुद्रणालय, संस्कार वाटिका, भोजनशाला, विहारधाम, जीवदया मंदिर, अनुकंपा सेवा संस्थान... ये सभी मिलाकर तकरीबन 1000 स्थापत्य की सौगात मिली है।



पू. मनोहरश्रीजी म.सा. ने पूज्यश्री की प्रेरणा से मालवभूमि के प्रथम-श्रमणी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया उसके बाद यह श्रावक-श्राविकाओं की दीक्षा का सिलसिला बदस्तूर जारी रहा और आज यह संख्या 97 वर्ष में 500 तक पहुंच गई है।



साथ ही उदयपुर, केशरियाजी परासली, घसोई, भोपावर, अमीझरा, मांडवगढ, उज्जैन, भेरुगढ, मक्षीजी, वही पार्श्वनाथ, आर्यरक्षित धाम, खिलचीपुरा, मंदसौर, सागोद, बिबडोद, करमदी, महिदपुर किलामंदिर, भक्तामर, कल्याणमंदिर आदि अनेक तीर्थो के विकास/निर्माण में पूज्यश्री एवं उनके समुदाय का मूल्यवान मार्गदर्शन रहा।



सुविशुद्ध संयमी पू. भद्रंकरसूरिजी ने कहा था कि- 'सागरजी' सागरजी म.सा. तो सिंहपुरुष थे सत्त्व तो उनका ही...।



सेठ पोपटलाल धारशी जामनगर ने कहा कि -

प्रबल पुण्योदय के बिना ऐसे समर्थ गुरु कभी भी प्राप्त नहीं होते...।



जिनशासक के प्रभावक श्रेष्ठीवर्य श्री माकुभाई शेठ ने कहा था कि- शिखरजी की जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखकर जिनका हृदय द्रवित हो गया और अपने आज्ञावर्तिनी सा. श्री रंजनश्रीजी से शिखरजी का जीर्णोद्धार करवाया। वे शिखरजी उद्धार के प्रेरक सागरजी थे...।



जिनशासन के प्रभावक आ. रामचंद्रसूरि म.सा. ने कहा था कि - सागरजी म. के काल धर्म के समाचार मिलते ही मुंह से अचानक शब्द निकल गए कि... 'जैन शासन के जबर्दस्त तार्किक गए...' सागरजी म. तो मेरे पिता के स्थान पर थे..।



सुरत के अग्रगण्य श्रेष्ठी शासन सेवक श्री शांतिचंद छगनलाल झवेरी ने कहा था कि - श्रमण भगवान महावीर के शासन पर होने वाले आक्रमणों और आफतों का दृढता से प्रतिकार करने वाले ऐसे सागरजी म. के चरणों में कोटि-कोटि वंदना... ।



सेठश्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के अध्यक्ष एवं जिनशासन के अग्रगण्य प्रभावक श्रावक कस्तुरभाई लालभाई सेठ ने कहा था कि- किसी की शह या शर्म में आना-जिसके स्वभाव में नहीं था... ।



सुप्रसिद्ध आगमज्ञानी पुण्य विजयजी ने नंदी सुत्तं-चूण्णी प्रकाशन के समय कहा था कि - जिनका मन-वचन काय योग श्रेष्ठ श्रुतसागर की तरंगों में तैरता था, जो श्रेष्ठ जिनागम के प्रकाशन में अप्रमत्त-योग से प्रवृत्त थे । योग, अयोग के विवेचन में कुशल थे, गाम्भीर्य गुण की गरिमा से शोभित थे, 'आगमोद्धारक' की श्रेष्ठ पदवी से विभूषित संत थे और दुषमकाल में जिन्होंने अपने आप में 'महानाद' शब्द का सत्य सिद्ध किया था । ऐसे साम्प्रतकाल में दिवंगत आचार्य जयेष्ठ श्री सागरानंदसूरिजी के पवित्र करकमल में यह ग्रंथ विनयपूर्वक समर्पित करता हूँ...।



जैन दर्शन के विशिष्ट ज्ञानी अजैन पंडित मूर्धन्य डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ने कहा था कि - एक सौ संस्थाएं एक साथ मिलकर जो काम कर सकती हे वह काम इस वीरपुरुष ने अकेले हाथ से किया है...।



श्रेष्ठ लेखक चिंतक श्री रतिलाल दीपचंद देसाई ने कहा था कि - सूरिजी की आगम-सेवा इतिहास में अमर बनी रहेगी और भविष्य की प्रजा उनको देवर्धिगणि क्षमाश्रमण की तरह याद करती रहेगी..



उच्च कक्षा के दार्शनिक पंडितवर्य श्री दलसुख मालवणिया ने कहा था कि - जैन धर्म और दर्शन के अध्ययन-संशोधन में जो प्रगति हुई है उसका श्रेय आचार्य श्री सागरानंद सूरिजी को है..



दार्शनिक विद्वानों में सर्वमान्य विद्वान पंडितवर्य सुखलालजी का कथन था... सागरजी म. में 'महानाद' प्रकट हुआ था... ऐसे व्यक्ति विदेश में जन्में होते तो इनकी सोने की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित होती...



सिद्धांतमहोदधि पूज्य प्रेमसूरिजी के शिष्य शास्त्रज्ञ विद्वान पूज्य आचार्य कुलचन्द्रसूरिजी के ये शब्द है कि कोइ एक भव में दो भव का कार्य करता है । कोइ सात भव का कार्य करता है । परंतु आगमोद्धारक सागरजी महाराज ने तो एक भव में 70 भव का कार्य किया है ।



श्रेष्ठ आराधक, विधिकारक, जैन शास्त्रों के ज्ञाता विद्वान् पंडितवर्य श्री छबीलदासभाई ने कहा था कि - उपा. यशोविजयजी म. को लघु हरिभद्रसूरि की उपमा देते हैं... वैसे सागरानंदसूरिजी 'लघुयशोविजय' थे..



सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता फतेचंदजी बेलाणी ने कहा था कि - देवर्धिगणि क्षमाश्रमण ने सभी शास्त्रों को लिखवाकर वल्लभीपुर को इतिहास में अमर बना दिया वैसे ही उसके बाद 1500 वर्ष में पहली बार 'सागरजी' ने सभी शास्त्रों को छपवाकर सुरत को इतिहास में अमर बना दिया है...



अंतिम शताब्दी सदी के मूर्धन्य विद्वान पू. मुनिश्री न्यायविजयजी म. (त्रिपुटी) ने कहा था कि - आज जैन समाज जो भी आगम-शास्त्र-पढना सीखा है तो वह पू. सागरजी महाराज का ही प्रताप है...



जिनशासन के प्रभावक एवं सक्रिय श्रेष्ठी जीवतलाल प्रतापशी ने कहा था कि -जडवाद की तरफ आकर्षित हुए समाज को और शासन के उत्कृष्ट कार्यों जिनके मार्गदर्शन हेतु की हमेशा आवश्यकता रहेगी।



जर्मन लेडी डॉ. क्राउझे ने कहा था कि - जैनाचार्य आनंदसागरसूरिजी यानि पूर्व में नहीं सुनी और नहीं देखी जैनों की जंगम (चलती हुई) लायब्रेरी...



बीसवी शताब्दी के चाणक्य पंडितवर्य श्री प्रभुदासभाई पारेख ने कहा था कि - यूं देखें तो सर्वगुणी सिर्फ श्री वीतराग भगवान ही हैं, परन्तु श्री सागरानंदसूरिजी म.सा. भी इस युग के एक महान बहुश्रुत आचार्य म. माने ही जाएंगे...



श्रुतभास्कर पूज्य आचार्य भगवन्त धर्मधुरन्धरसूरिजी ने फरमाया कि पूज्य आगमोद्धारक श्री वर्तमान समय के देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण है।



ज्ञान की अधिष्ठायिका देवी को सरस्वती देवी तो, ज्ञान के गुरुदेव को सागरजी म.सा. कहते हैं।

श्रुतोपासना साहित्य सर्जन :

* 187 प्रतों औक पुस्तकों द्वारा कुल 8,24,457 श्लोक प्रमाण आगम तथा अन्य शास्त्रों का संपादन तथा मुद्रण कार्य.

* 83 ग्रंथों की मननीय-प्रस्तावना का लेखन कार्य.

* आगम साहित्य का 52 विषयों में वर्गीकरण.

* संस्कृत-पाकृत भाषा में 66,562 श्लोक-प्रमाण शास्त्रीय ग्रंथो की रचना। कुल सर्जन 1 लाख श्लोक के करीब।

ज्ञानतीर्थ - आगमोद्धारक पूज्य गुरुदेवश्री की जीवन-झाँकी

संवत

1931 : गुजरात के कपड़वंज नगर में मिति अषाढ वदी (गुज.) अमावस्या के शुभदिन बारहव्रतधारी सुश्रावक यमुनादेवी मगनभाई की धर्मपत्नी सुश्राविका जमनाबहन की रत्नकुक्षि से जन्म।

1947 : सौराष्ट्र के लिम्बडी नगर में परम श्रद्धेय श्री झवेरसागरजी महाराज के सान्निध्य में दीक्षा-ग्रहण एवं प्रथम चातुर्मास। उपस्थापना पूज्य पन्यास श्री हेतविजयजी महाराज साहेब के वरद हस्त।

1948 : मार्गशीर्ष सुदी12 को पूज्य गुरुदेव का स्वर्गवास। अहमदाबाद में स्वतंत्र चातुर्मास संविज्ञ श्रमण-गणनायक परमोपकारी श्री मुक्तिविजयजी (मूलचंदजी) गणिवर के प्रशिष्य पूज्य लब्धिविजयजी म. के सान्निध्यमें।

1949 : उदयपुर के गोवर्धन-विलास में अभ्यास एवं स्थानकवासी संत श्री आलमचंदजी से परिचय। उदयपुर में चातुर्मास एवं श्री केसरियाजी-संघ।

1950 : पाली-चातुर्मास। संघ में ठाणांग सूत्र का सटीक विवेचन।

1951 : सोजत चातुर्मास। 'पाणस्स' की चर्चा। सिरोही राज्य के जनपद जावाल में त्रिस्तुतिक समुदाय के साथ शास्त्रार्थ और विजय।

1952 : दीक्षित पिताश्री के सेवा-सुश्रूषा तथा उन्हें अंतिम आराधना कराना ! पेटलाद-चातुर्मास। सर्वप्रथम संघ समेत श्री संवत्सरी पर्व की शास्त्र एवं परम्परागत पद्धति से आराधना। संवत्सरी प्रतिक्रमण में अहमदाबाद के श्रेष्ठिवर्य श्री मनसुखभाइ भगुभाई द्वारा स्वर्ण-अंगूठी की प्रभावना।

1953 : छाणी चातुर्मास। न्यायशास्त्र के अभ्यासार्थ प्रतिदिन बडौदा गमनागमन।

1954 : पार्श्वचंद्र मुनि, जैनेतर विद्वान एवं कलोल में स्थानकवासी संतों के साथ शास्त्रार्थ तथा खंभात में चातुर्मास।

1955 से : साणंद एवं गुजरात की राजधानी अहमदाबाद में चातुर्मास तथा

1957 : योगो द्वहन।

1958 : पाटण में अकाल निधि हेतु उपदेश व निधि-संग्रह तथा अहमदाबाद-चातुर्मास।

1959 : मुनिश्री नेमविजयजी के पंन्यास-पद योगोद्वहन के लिए भावनगर-चातुर्मास।

1960 : धोलेरा में भगवतीजी सूत्र का योगोद्वहन प्रारम्भ। अहमदाबाद में पंन्यास पद से अलंकृत एवं पूज्य पंन्यास प्रवर श्री नेमविजयजी म. के समवेत चातुर्मास।

1961 : पेथापुर प्रादेशिक परिषद में प्रवचन। कपडवंज-चातुर्मास।

1962-63 : भावनगर-सुरत में चातुर्मास।

1964 : सुरत बडा चौटा के चिमनलालभाई को प्रतिबोधित कर प्रथम नगर-यात्रा का आयोजन। एक लाख रुपये की रकम से सेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोधारक निधि का श्री गणेश। श्री समेतशिखरजी पर्वत पर भवन-निर्माण की योजना, आखेट पर प्रतिबंध लगाने की अपील का समर्थन व सफलता। श्री समेतशिखरजी क्रय-व्यवहार पूर्ण व बम्बई में चातुर्मास।

1965 : पूज्यपादश्री के सान्निध्य में बम्बई से श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ के लिए सर्वश्री अभेसिंग लीलाभाई द्वारा छ'री पालित संघ (पदयात्रा) का आयोजन। श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ को लेकर दिगम्बर-श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के केस में ज्वलंत विजय। युरोपियन न्यायाधीश द्वारा पूज्यश्री की ज्ञान-चारित्र व सत्यनिष्ठा की मुक्तकंठ से प्रशंसा। विदर्भ प्रदेश के येवला में चातुर्मास व उपधान तप।

1966 : सूरत में शासन प्रत्यनिकों को सुयोग्य शिक्षा का उपदेश। चातुर्मास व उपधान तप।

1967-68 : क्रमशः सूरत, खम्भात में चातुर्मास।

1969 : सांसारिक ज्येष्ठ बन्धु मुनिराज श्री मणिविजयजी म. के योगद्वहन निमित्त छाणी चातुर्मास।

1970 : पाटण के मारफतिया पाडा में चातुर्मास तथा आगम-वाचना की प्रेरणा।

1971 : श्री भीलडियाजी तीर्थ का छःरिपालित संघ। श्री भोंयणी तीर्थ पर श्री आगमोदय समिति की स्थापना। आगम ग्रंथ मुद्रण प्रारम्भ। थंभलाज-पाटण में चातर्मासिकाल में प्रथम आगम-वाचना।

1972 : कपडवंज में द्वितीय आगम-वाचना। अहमदाबाद चातुर्मास की अवधि में तृतीय आगम-वाचना।

1973 : श्री राजनगर जैन धार्मिक प्रतियोगिता परीक्षा का अहमदाबाद में श्री गणेश। शेषकाल में सूरत में चतुर्थ आगम-वाचना। चातुर्मास में पाँचवी वाचना।

1974 : सूरत के श्री संघ को एकता के सूत्र में आबद्ध किया। वैशाख शुक्ल पक्ष में आचार्य-पद पदारोहण। सूरत में भव्य महोत्सव का आयोजन। बम्बई चातुर्मास। अकाल पीडितों के लिए अकाल निधि कोष भी स्थापना।

1975 : सूरत-चातुर्मास * श्री जैनानंद पुस्तकालय की स्थापना * उपधान * 4 मुनिवरों को गणिपद प्रदान।

1976 : श्रेष्ठिवर्य श्री जीवनचंद नवलमल झवेरी द्वारा पूज्यपाद के सान्निध्य में श्री सिद्धाचल गिरिराज के लिए छःरिपालित संघ का आयोजन। पालीताना चातुर्मास के दौरान छठवी आगम-वाचना व उपधान तप।

1977 : मध्यप्रदेश अंतर्गत रतलाम में सातवी आगम-वाचना। सैलाना में चातुर्मास। सैलाना-नरेश को प्रतिबोध। 'अमारी प्रवर्तनफक्की घोषणा।

1978 : रतलाम चातुर्मास। सेठ ऋषभदेवजी केसरीमलजी जैन पेढी की स्थापना व उपधान तप।

1979 : मालवान्तर्गत श्री भोपावर तीर्थ का उद्धार। मांडवगढ तीर्थस्थान हेतु सम्बंधित रियासत से समझौता। सेमलिया-पंचेड के जागीरदारों को प्रतिबोध। त्रिस्तुतिक संप्रदाय के अग्रगण्यों के साथ वाद-विवाद व विजय। रतलाम में चातुर्मास व उपधान।

1980 : श्री समेतशिखरजी तीर्थ दर्शन हेतु विहार। कलकत्ता चातुर्मास एवम् उपाश्रय-ज्ञानमंदिर हेतु निधि एकत्रित करने की अपील।

1981 : शिखरजी तथा अन्यान्य कल्याणक भूमियों की पुनः यात्रा। अजीमगंज चातुर्मास। जैन हिंदी साहित्य प्रकाशनार्थ निधि के लिए उपदेश।

1982 : राजस्थान-सादडी चातुर्मास । श्री पोरवाल संघ में एकता प्रस्थापित तथा उपधान तप ।

1983 : श्री केसरियाजी तीर्थ पर ध्वज-दंड आरोपण सह प्रतिष्ठा । उदयपुर चातुर्मास । श्री जैनामृत समिति की स्थापना ।

1984 : श्री तारंगाजी तीर्थ में श्री अजितनाथ प्रभु की पादुका की प्रतिष्ठा । श्री माणिकलाल भगुभाई द्वारा सामुदायिक नवपद ओली आराधना । 45 आगमतप का उद्यापन । आस्तिक-नास्तिक चर्चा व वादविवाद । अहमदाबाद चातुर्मास । देशविरति धर्माराधक समाज की स्थापना । मुनिश्री माणिक्यसागरजी म. को श्री भगवती सूत्र का योगोद्वहन कराना । शिष्य-प्रशिष्य वृद्धिवर्ष ।

1985 : शिष्य-प्रशिष्य मुनिवरों को गणि, पंन्यास व उपाध्याय पद-प्रदान । श्री शत्रुंजय तीर्थ संरक्षण हेतु निधि एकत्रित । पालीताना में सामुदायिक ओली-आराधना । बालदीक्षा आंदोलन के दौरान जामनगर में चातुर्मास ।

1986 : सूरत में नवपद आराधक समाज, दि यंगमेन जैन सोसायटी एवम् श्री देशविरति धर्माराधक समाज का संयुक्त अधिवेशन । सामुदायिक नवपद तपाराधना । झवेरी नगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड की स्थापना । खंभात चातुर्मास ।

1987 : प्रेरक उपदेश के फलस्वरुप अहमदाबाद में श्री जैन साहित्य का बडे पैमाने पर प्रदर्शन आयोजित । अहमदाबाद चातुर्मास।

1988 : बम्बई चातुर्मास। श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति की स्थापना व उपधान तप।

1989 : बालदीक्षा सम्बंधित नाटक का जोरदार विरोध। सूरत में चातुर्मास। श्री संवत्सरी पर्व की शास्त्रोक्त पद्धति तथा पूर्व परम्परानुसार स्थानीय संघ समेत आराधना। साथ ही उपधान तप आराधना।

1990 : प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर अहमदाबाद में मुनि सम्मेलन सफल बनाना। बडौदा रियासत द्वारा जारी प्रस्तावित सन्यास प्रतिबंधक प्रस्ताव के विरोधकों का नेतृत्व ग्रहण करना। मेहसाणा चातुर्मास।

1991 : जामनगर में भव्य उद्यापन। राजकोट में अपूर्व व्याख्यान-श्रृंखला व पालीताना में उपधान।

1992 : पालीताना में आदरणीय उपाध्याय श्री माणिक्यसागरजी महाराज आदि 4 मुनियों को आचार्य-पद से अलंकृत। जामनगर में लक्ष्मी आश्रम आर्याम्बल खाता एवमं जैनानंद ज्ञानमंदिर की स्थापना। जामनगर चातुर्मास। श्री संवत्सरी पर्व की संघ सहित शास्त्रोक्त पद्धति से आराधना।

1993 : जामनगर में श्री देवबाग संघ की संस्थापना। भव्य उपधान तप। शासन सम्राट आचार्यदेव श्री नेमीसूरीश्वरजी म.सा. के साथ आगमोद्धारक आचार्य भगवंत का भव्य चातुर्मास। शास्त्रोक्त पद्धति से श्री संवत्सरी पर्व की सोल्लास आराधना।

1994 : उभय आचार्यदेवेश के नेतृत्व में श्रेष्ठीवर्य श्री पोपटलाल धारसीभाई एवम् चुनीलाल लक्ष्मीचंदजी द्वारा जामनगर से सौराष्ट्र तीर्थयात्रा (पालित) संघ का आयोजन । श्री सिद्धाचल गिरिराज की तलहटी में श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था स्थापन । श्री वर्धमान जैनागम मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ । शिलोत्कीर्ण आगमों का श्रीगणेश । पालीताना में चातुर्मास तथा उपधान तप ।

1995 : पूज्यपाद गुरुदेव के उपदेश से प्रेरित होकर श्रेष्ठीवर्य मोहनलाल छोटालाल द्वारा भव्य उद्यापन का अहमदाबाद में आयोजन । अहमदाबाद चातुर्मास । श्री श्रमण संघ पुस्तक संग्रह पालीताना की स्थापना ।

1996 : गणिवर पू. क्षमासागरजी महाराज का अहमदाबाद में पंन्यास पद प्रदान तथा पालीताना में चातुर्मास-उपधान ।

1997 : पू. पंन्यास श्री क्षमासागरजी म. को 'उपाध्याय' तथा मुनिश्री चंद्रसागरजी महाराज को 'गणि व पंन्यास पद' से अलंकृत किया। श्री सिद्धचक्र गणधर मंदिर निर्मित आरम्भ । पालीताना चातुर्मास व उपधान तप ।

1998 : पालीताना में चातुर्मास व प्रतिष्ठा की पूर्व तैयारियों की शुरुआत ।

1999 : पालीताना में उपधान तप । श्री सिद्धाचल गिरिराज की तलहटी में नव निर्मित आगम मंदिर में सहस्त्रावधि जिन-बिंबों की माघ वदी द्वितीया के शुभ दिन अंजनशलाका तथा

वदी पंचमी के शुभ मुहूर्त पर आगम मंदिर व सिद्धचक्र गणधर में सौल्लासपूर्ण वातावरण में प्रतिष्ठा सम्पन्न । कपडवंज में आयंबिल ओली तथा चातुर्मास । श्री देशविरति धर्माराधक समाज का अधिवेशन मुनिश्री हेमसागरजी म. को 'गणि' पद प्रदान ।

2000 : कपडवंज से बम्बई की ओर विहार । स्थान-स्थान पर स्वयंभू स्वागत व भव्य सन्मान । सूरत आगमन पर 90 हजार मुक्ता मोतियों द्वारा आरती उतार कर अभूतपूर्व सामैया । आडम्बर सहित भव्य शोभायात्रा । बम्बई चातुर्मास।

2001 : सूरत चातुर्मास । वृद्धावस्था के कारण प्रदीर्घ स्थिरता तथा नूतन ग्रंथों का सर्जन-लेखन ।

2002 : सूरत श्री संघ को श्री वर्धमान जैन तामपत्र के लिए सदुपदेश । फलतः वैशाख सुदी एकादशी के शुभावसरपर श्री आगमोद्धारक संस्था की स्थापना । बाजीपुरा प्रतिष्ठा सम्पन्न व सूरत में चातुर्मास ।

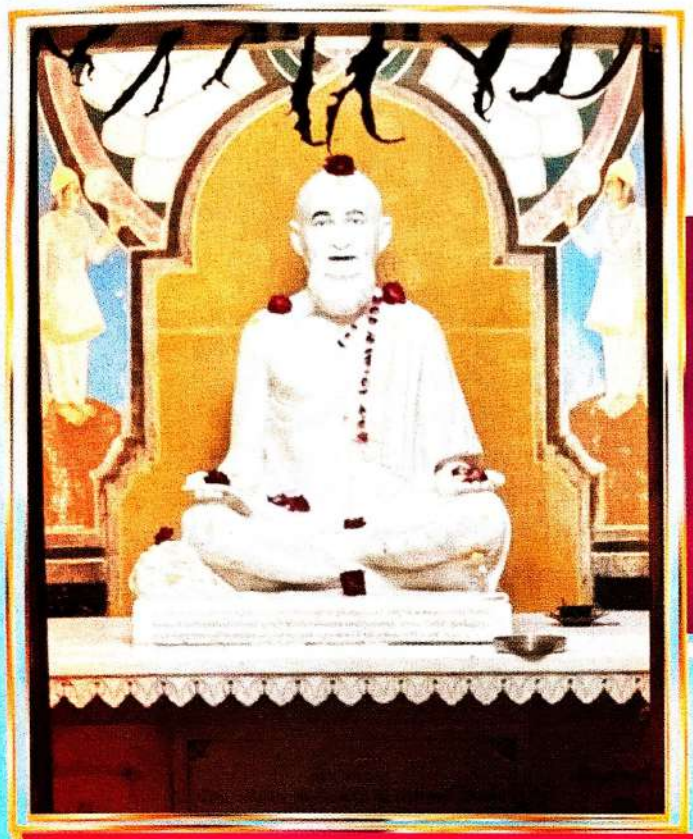
2003 : फाल्गुन वदी षष्ठी के दिन श्रीमान् माणिकभाई मनसुखलाल के हाथों श्री आगम मंदिर का खनन मुहूर्त । वैशाख वदी द्वितीया को श्री वाडीलाल चत्रभुज गांधी के करकमलों द्वारा आगम मंदिर शिलान्यास विधि सम्पन्न । सूरत में चातुर्मास । आश्विन सुदी दसमी के शुभ मुहूर्त पर नियोजित आगम मंदिर के लिए पालीताना आगम मंदिर में अंजनविधि सम्पन्न । 120 जिन प्रतिमाओं का नगर-प्रवेश।

पूज्यश्री गुरुदेव के सदुपदेश से पंजाब निराश्रित निधि एकत्रित।

2004 : माघ सुदी नवमी, शुक्रवार के ठीक 9 बजकर 29 मिनिट पर श्री वर्धमान जैन पत्रागम मंदिर में भगवान महावीरादि 920 प्रभु-प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा। सूरत चातुर्मास। शास्त्रोक्त पद्धति व परम्परानुसार श्री पर्युषण पर्व में संवत्सरी-दिन आराधना।

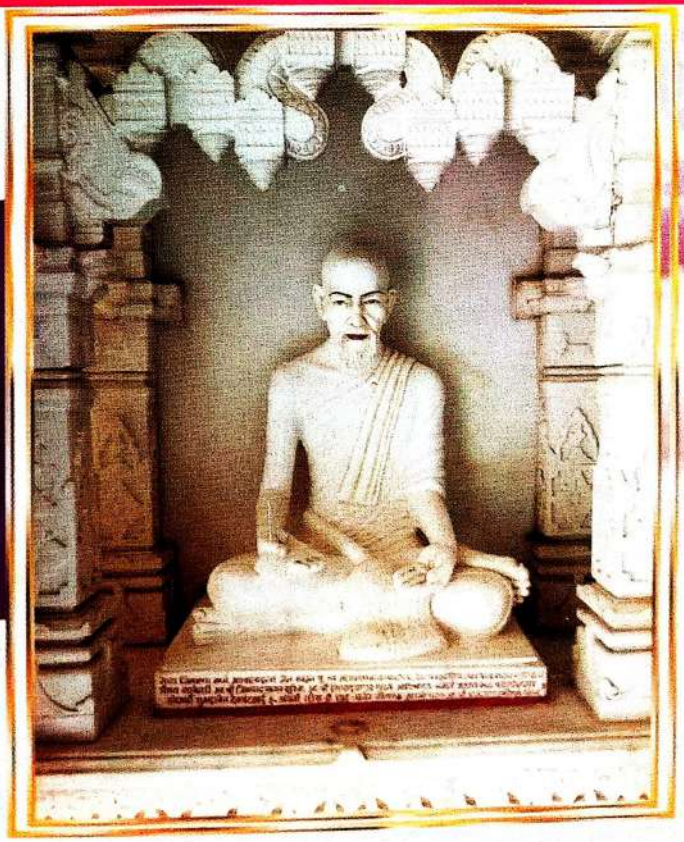
2005 : पौष वदी पंचमी की रात्रि में अचानक अस्वस्थ। यकायक शय्याग्रस्त। तथापि गंथ-लेखन अबाधित। ध्यान-धारणा सह चातुर्मास में निमग्न।

2006 : अंतिम ग्रन्थ 'आराधना मार्ग' की रचना। वैशाख सुदी षष्ठी से अन्नजल त्याग। चिरंतन मौनव्रत। वैशाख वदी पंचमी शनिवार को लगभग तृतीय प्रहर के 4-32 पर 75 वर्षीय पूज्यश्री का अपने पट्टधर शिष्य तथा 'सागर' शाखा के उत्तराधिकारी आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी म.सा. के श्रीमुख से श्री नमस्कार महामंत्र का श्रवण करते हुए अर्धपद्मासनावस्था में समाधि पूर्वक-सूरत स्थित झवेरी मंछुभाइ दीपचंद धर्मशाला में देहत्याग।



सूरत - गोपीपुरा स्थित
समाधि मन्दिर

ज्ञानतीर्थ, आगमोद्धारक
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा



सूरत के प्रतिष्ठित...
अठवालाईन्स संघ की शान...
श्री फूलचंद कल्याणचंद झवेरी
निर्मित जिनालय में.. सुशोभित
गुरु देवकुलिका का दृश्य

परम श्रद्धेय भक्ति प्रभावक,
परम पूज्य आचार्यदेवश्री जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी महाराजा
के असीम उपकारों की पुण्यस्मृति में...

प्रवचनप्रभावक परम पूज्य आचार्यदेवश्री हेमचंद्रसागरसूरिजी म.सा. एवं
पू.सा.श्री दिव्यपूर्णाश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री दिव्यप्रज्ञाश्रीजी म.सा.
पू.सा.श्री दिव्यांगनाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से...

श्रुतभक्त





श्रेष्ठीवर्यश्री भूरालाल भूखणदास
सधाणी परिवार, सुरत



Design :
JAINAM GRAPHICS
98258 51730 / 94264 26510